:: दिलीप - उम्मेद ::

रीतिकालीन शृंगार काव्य में शृंगार निर्मया
रीतिकालीन भूगर वाणिज्य में भूगर निकाय

भूगर की विवेचना :- भूगर शब्द मात्र अत्यार्थ, नाम,

चुनाव राज रुपा, सजीवता शान्ति
अथवा हैं अभिव्यक्ति भी प्रसूक्त हुआ है। (१) साहित्य में भूगर शब्द
का प्रथम व्यापक पृष्ठभुक्तीण से नियाय गया है। साहित्य दर्पण
कार ने भूगर शब्द का अर्थ मन्नमानदुनि से अर्थ में नियाय है जिसका अर्थ
कामदेव है। (२) भूमि शब्द कामसारना की प्रसूचि का वाष्प भी है
उद्घात का अर्थ अभूतित होना माना गया है। याँगिनार शब्द भूगर
का अर्थ: भूमि एवं गार तीन वृक्षों का शम्सळाय कामसारना का
उद्घात माना गया है। (३) वर्तुल: भूगर शब्द कांडका का
वाष्पभाव का उद्घात अभिव्यक्ति का दृष्टि है। वात्स्यायन के
काम यून में इतिहास विवेचना हस्ती अर्थ में वह गई है। (४) फ़िर भी
भूगर शब्द का वास्तविक अर्थ कोई कामसारना नहीं है और न

प्रीतिभूगर - (१) शैच उबतन, र्नान, कैश्वा, ओराग,
णध जारक (महावर) महाजन, ताम्भू, क्रान,
घूणण, गुण्य, गुण्टार, भूत्य, भान्तित्व,
विबूध निन्दु।

(२) भूगर मन्नमानदुनि साहित्य दर्पण तृतीय परिभाषा श्लाक श्लैष
(३) देव मन्नमादीन भूमार्क प्रसूचियाँ पर्युराम चल्लियू-पृष्ठ १५,१६
(४) दैव कामसुत्र विभागण १ ग्रंथाय २

यूल ११ तथा १२।
शृंगार शब्द शृंग धातु से निकलता हुआ है। अथवा शृंग कामिक को कहते हैं। और उसकी उत्पत्ति का कारण वह शृंगार रस भविष्ट है जो उक्त शृंगार का होता है।

इस प्राप्ति दैनिक वासना के उपस्थान है तथा स्नेह की भविष्यतिः है। (२)

शृंगार शब्द शृंग धातु से निकलता हुआ है। अथवा शृंग कामिक को कहते हैं। और उसकी उत्पत्ति का कारण वह शृंगार रस भविष्ट है जो उक्त शृंगार का होता है।

शृंगार शब्द में शृंग और शार दौ शब्द है। शार की मूल धातु वट है जिसका अर्थ होता है मानिता या गाचि। इसलिए शृंगार शब्द का अर्थ कामिक की उपलब्धि है।

साहित्य में शृंगार की विवेचना साहित्य के जन्म से ही होती थी रही है। ज्ञातन्त्र में शृंगार के अर्थ की बीजता और सम्पत्ति विवस्थित रहने है। शृंगार का मुलायम नारी मानी गई है जो हुप, रस, गन्ध, र्प्यादि की भविष्यत्तः की है। शृंगार के सामाज्य में नारी महिमामित्ति पद पर प्रतिष्ठित हुई है।

यूा के बकुल साहित्य की मान्यताओं एवं मूल्यों, विचार-प्राप्ति तथा मानवकृति और शैलुकाचारों में परिवर्तन नाता रहा है।

(२) स्नेह जाति महूषणां स्नेहां च पुष्पमिः सा।

परस्पर यूा स्नेह काम साध्वीनियति।। शालूदेरूर १ - ६
फलस्त्रूणार के सरासरण्य में काँटे परिवर्तन नहीं हो पाया। शूरार में स्त्रीलिंग परिवर्तन स्मारक, स्मारकलिंग, समृद्धता तथा गौरवपूर्ण स्मारक अर्थात तत्वमात्र है जो शूरार में प्रथममें समाधान है जो मान्य। शूरार पर काँटा इसके द्राक्षलक रामणीय, शासक, राज्य का जनक या उपज्ञात है। दिरागगत स्थानिक अन्त:का वनायाम मानों तथा बीजागरण ही है। उसका शूरार स्थान की धारा ली है। उसका शूरार स्थान की धारा ली है।

यही कारण है कि शूरार सम्बन्ध में काँटा रस की अनुपूर्णता में स्मारकलिंग रूप से नज़र आता है। तुम्हें क्या त्याग और वाणिज्य के स्मारक के निषिद्ध मार बृक्षी स्मारक नहीं है। फैसले और सामग्री की मार मुख्य विषयक है। स्वच्छन्द माण्डलवाले यादे की अन्त:पूर्णता तथा अर्थितितिक वस्तुत: का निश्चय पैमाने और सामग्री की पूर्ति की पर रहते है।

नारी की सामग्री का है स्वतंत्र बिन्दु माना गया है। कवि ने नारी के ग्रां मुक्त: के विषय में रात्ती सुष्कर की है जो नव उपन्यास के साथ बहस करने का साध किया है। शूरार की दृष्टि नारी सामग्री में वही रस्मि कि वह मुक्तिभाव सामग्री हैं उपाधी से हो गई है। कवि ने शूरार रस की भावभक्ति के लिए नारी के बादी के और उन्तितितिक सामग्री का मिला किया गया। नारी सामग्री तथा उन्होंने रस का व्याप्त स्मारक बनाया है। नारी सामग्री के उन्हीं के नारी को जबलबन करता है।

तथा उल्लेख की अवस्था का सारे संबंध रस का सारांश होते हैं। इसीलिए शूरार रस का रसारण्य निर्देशवाद है।

अनिष्पुराण का नारी सम्बन्ध रस को शूरार से उद्झुट मानकर उसकी शैक्षक ट्यूटिग की है।(१)

(१) अनिष्पुराण
भरस्मिति ते कपने नाद्यंशास्त्रं में लिखा है कि "जै दिच्वर\nहै, पावन है, उज्ज्वल गौर श्रद्धापि है सभी शूरगारं में समाविष्ट ही हो\nजाते हैं। (२)

शूरगार है मूल में रति किया क्राम की पावना निहित है।
सम्पूर्ण गृहें रति तथा क्राम जन्म पाववं यथं विवाहित हैं परिभाष्यप्रत्य है। धृष्टि का स्त्रूल सुरंग, गौरीण्वा तथा "विरसविना" ज्ञान स्थान सभी\nक्राम पावन हैं दुरुस्मितिहै। शूरगार के मूल में जोन्चित शारीरिक\nसूक्ष्म ही तालसा है कामविज्ञान या "निवाम" व वायुना धृष्टि ने कामशास्त्र\nव्यपकता का भाग है। जीवन का अन्तर रसवरीक\nही स्फुत क्राम पर क्रियास्थान का आँकुंड़त हैं। मानसिकता\nका विज्ञान है या रक्षिता का बौध्य हेतन्त हैं बलमय\nउपमायकारिता हैं। पार्थिव शरीर इत्यादि सांस्कृतिक है आकर्षण है ही शूरगार को\nजन्म दिया है और उसका परिणाम प्राप्त है। मनुष्य कामीरिक है\nकामपुल है। इत्यादि शूरगार की उत्सुकता जन्म रसों की तुलना में\nरहीं अभिक है। मनुष्य के विलासीक्षा या विद्वंत तालम् भाव का\nदस्म एवं ज्ञान शूरगार जन्म उद्देश्यों से हाँ जाता है इसके उसे\nमानसीक संज्ञान प्राप्त होती हैं।

हृदमित्त दृष्टि किर्पर को विज्ञान है विचारक का जै दिच्वर\nरस में उपलब्ध होता है वह जन्म रसों में हृदयाप्स है। सांस्कृतिक है\nमार्गिता में उत्सुकता एवं अभिव्यक्ति रहता है। ते वो तल नामिता के\nपार्थिव कल्पन में सवारिच्छ एव्व दृष्टिकोण लाभ होते है।

गारी वासना को सवारिच्छ उद्देश्य करती है और उसकी
मन यथा मानव भी नहीं है। मन यथा लाभी छोटा है यह विश्वास कार्य करता है। और यथा तत्त्व रहता है यह शाश्वत सत्य है। का उपनिषद् का महाकवि दास्यहित का शृंगार रस का मात्र प्रति है। का शृंगार का आरक्षण सामाजिक नायक नामित नहीं होती है। उसे तत्त्व का दैल्य शृंगार कहते हैं तथा श्रद्धा श्रृंगार वृत्ति का शासक भूमि होता है। तो वह - शरीर आवास आधारित शृंगार का दूध धारणा ने लेते हैं जिसे रूपस्य की विदा से विभिन्नित किया गया है।

मनावशास्त्रिक विचारक श्रृंगार में सम्बन्धित तत्त्व का शरीर शास्त्र में सम्पूर्ण व्यापार जो मानव कार्य देखता होता है उसकी मूल में वास्तव से तथा आम की भावायनता मानता है। आम की मूल बन्धन से तथा निर्माण से भरपूर है। आत्मसाधन सरस्वती, सम्पत्ति और साहित्य के मानसक्षण एवं व्यवहार में उसी की परीमाणता जनता विचित्र होती है।

शृंगार रस का विभाजन है - सत्यम एवं वियोग। वियोग में तम्म्क, सांके, मितार-चारित्र, निर्माण, गार्भस्थ शालिक, परिपत्र, विकास, अप्रभुव श्रृंगार है श्रृंगार शाखा एवं वियोग श्रृंगार का एक दृश्य है। जिसली आते हैं और वियोग में श्रृंगार का एक दृश्य है। विभिन्न विश्लेषण विविधता शृंगार का यथा शृंगार का यथा है।

मनावशास्त्र के पूर्व व्रजस्या शाखा में तत्त्व शास्त्र में शालिक, मान, संवेदन, माउल, उपदेश शाखा हैं इन्होंने शृंगार के हिंदी पदों को शालिक्षण के साथ स्पष्ट किया है। तत्त्व शास्त्र का विषयति

9 रूपाम्य में शृंगार निधियण पृष्टि १२, १३ सूक्ष्मतय।
पर उड़ना गढ़ कहा है कि ज्येष्ठ भाद्र में बन्य तृणारों के रस्से वनों का निषादगति भर उनके पूर्वोगी गंगों की बन्य रचनाओं में भाव कामयाब है। निषादगति एवं ज्येष्ठ की रस्से बक्सियार तृणार रस्से की ही थी। निषादगति सूर्यार वणन में ज्येष्ठ थे वह स्वामि मुरारी गर्दिया ने कि सूर्यार और परवर्ती शिक्षाओं के भी सारे निश्चित मार्ग है। ज्येष्ठ की निषादगति भी ज्येष्ठ भाद्र की परम्परा थी उसमें उन्होंने नारकिश में नह निषादगति नह राजार रणनीति को दिखाया। इन क्रियाओं के राजा की ज्येष्ठ भाद्र की निषादगति बनाया। राजा के गव्हन अवस्था है, राजा साथ ही वाली पाता है और अविकल पर लंबिक अभाव का रहता है। नारकिश उद्यम देने पर रही है और उसके सिर्फ़ में भाव का लन्दन है।

उसकी देखभाल दिखाया है तापक जो रही है और वह मिलन है लिख शब्दिक है। सरसराज में पतिराम ने वसत सब का उद्यम करती हुई लिखा है कि :- (प)

(प) ना किया वह भी बुधपर शुरुआत में लोग, ना किया मना बुधपरी की चाल पर।
रंग ने क्षुद्री मारी, कबीर उरजन है, नारकिश का दौड़ी तौर पर सारा, निषाद मर।
पतिराम मुनिम रहाल रहे कहूँ जैन मर,
उनका निखार रहा है जैसा शाया लाल मार, पति तुझे जैन रहाल उद्यम सब
सारे हैं जाल मरा सारा, निषाद मनोदल मार मर। -रसराज है ६९।

(फ)िानन लांग मेरा भुआजन, सूर्य करे, लांग
लांग मेरे लागे जाल लांग भरने से
गा घरर सुधुम भ्रम सारा, जाल मेरे, वाण उत्कत उठ उठे ही है।
पतिराम मनोदल पवन की फालयत। जाल शहदी सारा राक तान दार्शन तैयार
सारे हैं जाल मरा सारा, निषाद मनोदल मर। - (रसराज पतिराम है २२।)
शूरार रस और शास्ति... का निवृत्त्व शास्त्रीय दृष्टि से प्रस्तुत करने पर लात होता है कि शूरार रस के पायं भी है जिनकी आपात्क पर यह रस बाह्यित है। उनको विवेचना निम्नलिखित है।

(१) स्थायीमाण :- अत में नायक नायिका परस्पर सम्मानित है। इस तन्माण में भूमिका का काम रत्निवार करता है जिसे लोकमात्रा में मेम बतलाया है। यही प्रेम या रस का शूरार रस का राज्यीमाण है।

(२) वाल्सि विमान :- स्थायीमाण से मार्ग में स्थित रसि भाव सम्मानित में जाता या प्रेषित करते पाते भाव विमान कहलाते हैं। रसि या प्रेम की भाव परिभाषा स्ट्री फ़ूफ़ा है ही है। क्योंकि भूमि रस के भाल्सि भाव नायक और नायिका को माना गया है।

(३) उदीपत विमान :- वालिका जो चैतालें करता है उसे उदीपत कहते हैं। उदीपतमाण स्थायीमाणों की उदीपत कहते हैं। कामाशुदित अभ्यस्ता तथा फूफ़ा हो के नहीं उम्मीद। कहाँ से रत्निवार बहुन्तरता के उदीपत नहीं होता और सुदरता जनिता का राष्ट्रवत विचार है जो दीवाने बुद्धि के प्राप्त होता है।

(४) उदीपत विचार जनिता का साध्यता विचारें जिसे सब कहते हैं

कामायनी.—प्रसाद
सुनिल गांगौर, धनी बुन्द का भक्त, माया मंगिमारे, सुन्दर
परिप्रेक्ष्य आमूर्णा सज्जा, आलमक मुखाप्ति; स्वातंत्र्य, महाश्वासी
रिमूकम सावन की काली घटाई आदि।

(४) सुनिलाम :-
अनुमान शब्द का अर्थ है माया के पाँच नील नाले
वाला। तात्पर्य यह है जिन बाथी स्थानों
से स्थायी माया थी होने का श्रान है अनुमान शल्कन और उद्देश्य
धारा उद्भव स्थायीमाया की स्थिति का जोखाम करने वाली
जन्म जैत्यावर दरी कर व्यक्त होती है वे अनुमान अलंकारी है।
उद्धेक्षण रुपरे में मानता ज्ञान क्षमित सज्जा, सादृश्य और जैत्य हो
जाता है और उसकी शारीरिक जैत्यावर, मुझारे माया मंगिमारे
मात्र होने लायी है। ये शारीर की जैत्यावर शारीरिक और शारीरिक
दो शक्ति की हार्टी हैं। शारीरिक जैत्याओं के हैं जिनके शरीर मनुष्य
विवर्त और असल्य हो जाता है। मनो कौवाल की चरम वीरता,
शारीरिक जैत्याओं की जन्म केली है। मनो कौवाल ही वे श्रवण
कर केली हैं। जैसे स्वर का शाना, आवृत्त का शाना, भास्खिक
जैत्याओं के अन्तर्गत नयन संचालन, बटाड, हास परिहास,
मुक्तिविधार, शास्त्रिय चुम्बन आदि आदि है।

(५) संचरीराम :-
जै माया स्थायी माया की सज्जा के लिए
व्यक्तित्व हार्दी है तथा जै वल को उद्धुल्लगी
की तार शैल प्रकट और विनष्ट है। जाते हैं उन्हें संचरीर माया
कहते हैं। मूर्ति रस है ३४ संचरीर माया स्वीकार गये हैं।

निवैद, रलाना, खाना, शुरा, मन, अभ, शालस्थ, दैन्य विन्ता,
मोह, स्मृति, धृति, नीरा, विकल्प, श्रं, शाला, जल्द, कार्य,
विवाद, आलुतप, निश्च, अपमार, आधुनिक सज्जा, आलमक
मुखाप्ति, व्यावस्थ स्थल, महाश्वासी रिमूकम सावन की भाली
घटाई आदि।
शुभार्गः - शुभार्ग का शारीरिक अर्थ है मात्र का पारिक्षण सहयोगी या मात्र के पीढ़ी जाने वाला। जिन वाणिज्य क्षेत्रों में स्थायीमाय होती हैं तो होने का शार भी क्षया आरंभ मर उद्घाटन द्वारा उद्देश्य स्थायीमाय की स्थिति का बाह्य करने वाली देव जन्म नैष्ठार्ग मंत्रि द्वारा व्यक्त होती है, ते शुभार्ग रक्षातः है।

उदाहरण अवस्था में मात्र ज्ञात शस्य संग्रह अर्थात चैतन्य ही जाता है और केवल शारीरिक नैष्ठार्ग, विक्षण मात्र मनोमय प्रभाव होने लागती है। ते शारिरिक जीवनांश कारक और शारीरिक दौर निर्हार की होती है। नैष्ठार्ग नैष्ठार्ग हैं जिनकी शारीरिक विभाग या अर्थात वह वर्तमान है। मनोनिष्ठा की चर्म तीव्रता विभिन्न नैष्ठार्गों की जन्म दैशी है। मनुष्य के अन्तर्गत वे उसी अंग तक बताते हैं जो स्वाभाविक और शारीरिक नैष्ठार्गों के अन्तर्गत निर्मल संवाल, कटाशा, हास परिवार, मूल्य विवाह आर्थिक पुस्तक आदि।

संचारी या व्यक्तिकारी मात्र :- जै मात्र स्थायीमाय का परिशुष्ट करने वाला अथवा समूह के लिए अपूर्वत होती है तथा जल के लक्ष्मी की तरह शिखर प्रभाव और विनिष्ठ हो जाते हैं वे संचारी या व्यक्तिकारी भाव रहते हैं। शुभार्ग रस के 34 संचारों बनाने में यह हैं। 

शुभार्ग रस की गैरकल्पना पर विवेचन :-

रस अपरिमित होते हैं दिखा होता है। रस का आस्त्वादन
वष एवम की परिपठ का उल्लेखन है। रसायनस्थिति जी स्मारित मात्र है कि उसमें धात्विक विस्तार और तीव्रता है। । शूक-गार का आधार भूमि रति क्षेत्र काम है। रति तद्योग वर्ष या पदार्थों में हो नहीं जैसे मैत्री भूमि का काम का बख्सत्तच्छ आद निविद है। रति क्षेत्र काम में समस्त जाल भुक्तानिविद है। नर नारी का विमान व्यवस्थान है। नर और नारी दोनों अपने आप में क्रमण है। दोनों यूनलता के लिए उत्सुक रहती है, यथी उत्सुकता यूनल होने की तीव्रता आशाकारा। प्रेम या भ्रात को जन्म देती है। शब्द यादन्द्रिय की निराशर स्त्र उ कांच सुधे मूल जाती है। (क)

एक बार रूप का चक्कु का जाने पर नयन काहू से चाहर हो जाते हैं फिर चाहे कार्य निन्दा करौ या सतर्क स्वरूप में बाह निवर्तिलय नारक में। संयोगिता मात्र की क्रिया भुनूत वरिष्ठ हैं। वह यथा यूनलता भास्त्रिक कामा में अपने भ्रात की खोज किया करता है। प्रेम पावना भ्रवण तथा स्कैन्सधी होता है। प्रेमी और प्रेमिका की स्थितियाँ के बीच जीवन की मंगलता है। प्रेम पात्र जब उसकी 

(क) खली जलसुन्दर वानर गार है। दुर राजत कानन है।
हति बालतिन में हवा ब्रूतन की
वर्षा दर ऊपर जाश्च है।
लट लौह, क्षिति क्षिति करै, कल कंठ ननी जल वासिः
को अंग तरंग उँठे दुलत की, परिह्न मानो श रूप न्यू हर चर

(क) गाथा लक्ष्मणी। ५५२ तथा बही।
निकट होता है तो दोनों में निवाण भित्र होता है। नैप का उन्माद चलकर व्यक्ति रहता है। क्रियात्मक शुल्क या घटना की सीमा में अन्यथा ही राज्य की व्यक्ति रहता है। या फिर दूरदूर दिशाण्विता का जीवन जिसमें जिस पात्र स्थित है। जाता है दूर चलता है। भित्र में व्यवस्थान उत्पन्न है आता है। इसे दोनों दिशाण्विता के स्थान रास के अनन्त लंबी गंगा और विशाल अंधार की श्रृंगारों में रहा गया है। कविता लोकभाषा नामक भाषा है। गंगा रस में ही सब शहीद, विभाज लंबी अन्तरालम घुसनी भाव भाव ते है। नैप रस में दे विलायांत रहते हैं शृंगार रस का स्थायीमूल रहते सबी रस में स्थायी मायाओं में सहाय्य है। नरगणी की श्रीमती सुषिमा गुलमे कुलकारण नी है। इसका स्थायीमूल हटता व्यक्ति स्वप्न है या इसकी स्थायी माया विशालों का कभी विनाश नहीं हो सकता सम्भव है छविलित कविताण भारती से ही तात्क नाथिका की आधार भाषा नए नारी के नैप का व्यवस्थान करने को करते रहैं और चलते रहैं। वंशार की यस्मी कविताएं नैप शृंगार रस का आधार प्रतिक्षा है। संसार की सभी कविता सुषिमा शृंगार के रस का जानकार में स्थिर हौल व्यक्ति छुप है। एक आधुनिक विद्वान ने तो यहां तक कहा है कि सभी ज्ञाति ही तथ्य नहर नारी के परस्पर आवश्यक पर निर्भर करना है। (२) महामाता रत्नेश की माया है कि — "जीवन की समस्त नैप और दृश्य की नीच पर उठी है, यदि मैं दोनों न हों तो जीवन में कुछ मी शैष्ट न रह जाये। सुषिमा में जितनी जीत और आत्मदायक अवस्थाओं है उनमें —

(२) सद्यस्म्य्युज्जल कल्याण वार्ष हौपावे - मू ६२
वैदिक काल तथा उसकी अवरोधी है श्रेष्ठ दोष और जाति में नानात्मक का ‘विखरता’ करता है

साहित्य के रूप मानो, साहित्य, सूचनियों, चित्र विषयों का कला, भिक्षु की फर्स्ट, पत्थर वा स्वर,
कौशल की गाथा तक जो श्रेष्ठ श्रेष्ठान की महत्वपूर्ण सृजनता अतिरिक्त अर्थ है। साहित्य नर नारी है श्रेष्ठ का कौशल विश्व
साहित्य का नेतृत्व कुल अखिल रजस्वला या है।

साहित्यिक काल का संस्कार गरहता है। उसमें नर नारी है श्रेष्ठ की वर्तमान है। श्रेष्ठ अर्थ है रूप के भ्रमित किरदारों में भी श्रीमति
की अपनी जड़ें मिलती है। श्रीमति नाटक में फैलती श्रीमति ने वाँ
नर नारी है श्रेष्ठ को वही जूलता है साथ चिठ्ठियों विषय में है।
रूप काल के भ्रमित किरदार के देव ने जूलता की महत्व का वर्तमान
प्राप्त हुए तिथा है जिनकी रजस्वला साधना मुख्ति और योग
dाता का मूल है। (१) जिन धातु के पूर्णी है मुख्ति नहीं
उसके नाम की पूर्णी क्रियावृत्ति रहती है।

रूपकला की महत्व प्रभुदशिका है। रूप काल के
में क्रियावृत्ति की अभिव्यक्ति है लिए फूल स्वर्णित थी। जो
रूपकला की श्रृंगारिकता में अभिव्यक्तिक गौण तथा दम तै
उत्पन्न व्रतन्त्यों नहीं है। उसमें स्वर्णित रूप से चर्चा चूहा
की साधना है जिसमें न शायद इतिहास का आरोप है न वास्तव के
उत्पन्न नववा श्रेष्ठ को अविनाशी रूप वैण का उचित अनुचित प्रयत्न। (२)

(१) महा काव्य देव - हिं. १२५
(२) रूपकला की शूर्पिका - हिं. सत्त्र पृष्ठ १३४
उंगार रात है दो फल स्वीकारे गए हैं। युग और दुःख जहां पर नायक नाषिका दरीन रूपरेखा आदि युग का अनुभव करते हैं वहां पर सौंपा उंगार होता है। हमें शालिश्न, चुम्न, परिरंभण आदि आस्था में डब जा चलते हैं। हमें नायक नाषिका एक दूरार है जिस शालिश्न और स्थान स्थान उद्दीपन होता है। मुख चुम्न शालिश्नबद्ध होता आदि अनुभव है और घुम रूपरेखा आदि मात्र संवारे मात्र है। संवार शृंगार है जन्माति रूप कार्ण और सिद्ध हो जाता है। देव ने रूप की परिमाण का अर्थ किया है -

देखत ही जो मन धरी, सूक्ष्म विकलित कर देख
रूप वस्तुन्त तारी जै, वह चरौं फलि लेख।
रूपानुमूलति की तीन अस्तित्व धरी गई है -

(क) वस्तुलाय अनुमूलति में वस्तु है विभिन्न आदि तै सामग्री जै तस्य रूप में ब्रह्मण किया जाता है।
(ख) रूप जन्म मानसिक आनन्द की अनुमूलति में वस्तु और मात्र का सामग्री होता है।
(ग) रूप की प्रति वास्तव की अनुमूलति में रूप के अनुसार उपयोग की वास्तव का भी गहरा रंग रहता है।
संयोग में सिद्ध है चित्रों में विभिन्न रंगलता मिलती है।
(घ) आभारवां में रजिज्जी घोला, नेत्रों में
अनुरूप के हीरे विवेक जाता, काम की प्राथमिक रूप
शैलना का आभार; वस्माम है लिंग आनन्दवी दर्शना,
वापस में आकंड होता, नयनों का गैर, समावेशण परिहार व्यंग्य चिरानी, गाहे पड़ना, उतारती दिशाना, मिलने है इन चिरानी में नायक नायिका के क्षेत्र मन और उनके वस्त्र सम्बन्धी वातावरण और साथ ही किस्म का मन भी उसमें तनाव होकर कहते लाता है।

नायक नायिका का एक नार समागम हैं उनका विपरीत होता है उसी विमलम शृंगार कहती है। शृंगार रस में संयोग की अभिव्यक्ति विमलम शृंगार को स्वरूप मानता है।
संयोग में हुदू रसिक वास्तविक 'मैंने' का स्वरूप कर पैता है। मैं का वास्तविक रूप तो विरह में ही निरक्तर है। विरह मैं का तथा स्वरूप है। वैद्य की यादन में मैंने घूम घूर निर्मल होकर निरोध जाता है। विरह के कारण में मामला बहस्ताता निश्चित नहीं हां नीचे मायेका और अत्यन्त की उकसालता के कारण रसायनतित की मात्रा और अधिक मानद ही जाती है। विश्व के कितने मैं स्वभाविक विषयों बिमलम की प्रगाढ़ता प्रदान की है।

जिस तरह श्रावस्ती की चराता में शरीर होता मानव हुदू है पवित्र होता है। जिस तरह रशन में घबरा करने में बान्द्रा आ जाती है उसी तरह मैं की पवित्रता की 'श्रावस्ती' विरह पर ही परदी जा सकती है। संयोग-वस्त्र में जै वस्त्र में नूलावी होती हैं संयोग में ही ही दुःखायी बन जाती है। विमलम शृंगार में संयोग जन्म हुँ सा वर्णन किया जाता है।

(2) हिन्दी नाटक का रसिलास पृष्ठ १३ हांघरिय निशु
अनुराग की लंबी खाई मापदंड विश्वास में ही है परंतु सुनिने विश्वास अक्षर के उपरांत नहीं किये थे और जब तक समय है पश्चात वाक विश्वास कृताकार श्रेष्ठ संगीत श्रृंगार के श्रृंगार की मायूसि एक ही अधार के माना जाता रहता। मनोदशा प्रायः प्रत्येक अधार के विश्वास में एक जबर्दस्त ही रहती। विश्वास दे उपरांत हैं दौँ भार है। एक बनने वाले विश्वास पाए अधार का हाल है अभिलाभ, एक्ष्याँ, विषर प्रारंभ और साम। इसी चार उपरांत हैं, पृष्ठराग, मान, विषर और अधार। वार्तव में विश्वास दे चार भेद हैं ही कहते हैं। पृष्ठराग, मान, विषर और अधार। मान दौ अधार का माना गया है भगवान कार और ज्ञानमान। विश्वास की एकदम शक्तियाँ हैं - अभिलाभा, (क) यूर-अभिलाभा(्र), जिन्ता(१) उन्माद(५)। मलाप(५), उमस(३) गुणवचन, समृति, स्थापचि, जड़ता तथा मायहाँ।

-----------------------------------------------

(क) नैन भी तिरंजु लागुहु, न छूट छूटै दुः प्राण।
शाम न बादल खसु, हेरै सौंक स्थान।

(ख) वह कृताकारने वह मूढ नताणि वहै, लक्ष्मीनारायण वर में भरलिणि वह गतिहार और क्ष्यांवति लसी पैं वह हसनेन विरासा न टरस र है।

(ग) नौबत सपने स्वामाधन हित मिल दरत विश्वास।
कपिल हरि हितियू गइ नीमाह नीवन वो।

(घ) नौबत ज्यात सपने वह रिसा रस मैं बैन पुकार।
उपरि श्याम घन की पूरति विरासू विरार न।

(ङ) हाँ ही वैरोः विरासु घै वैरोः सच गाव।
कहा जानने में कहत है साहिं तीसरकर नान।

(च) लौक गह सुधि लौक गह हुषि राय हसी उन्माद जग्गाँ है।
कितियों ने विराटानुसार श्रीमति का जल विहान मन्दिर की धारित कपड़े पूजा दियाहै तथा। विषयों में दुक्कता माया दृष्टि की है।

कितने और विषयों दोनों फलों का भंडार स्वादांनक चिन्ह दृष्ट है। उसे एक और जीवन के साइन्द के पालक सहृदय रूप में भावना में विश्वास दिया गया दृष्ट्यों की वैद्यन द्राक्षें माहात्मान की है तत् दुःखी और सत्यवादी हैं। चिन्ह में विषयों

व्यापक विश्लेषण करके एक निष्ठू प्रेम आया मानव के लिए जीवन की जटिल परिस्थितियों को सुलझाने का मार्ग भी प्रदशित किया है। रस की साँचार सूची यही मूहरा का माया है, जो माया तनांतर के कारण स्वयं धारण करता है। मूहरा रस की पूर्वेलित में गुंजार पाटक अपने शरीर की सुखदुःख मूल जाता है।

रत्नीलिपि - रसों के दृश्य में मूहरा श्रेष्ठ एवं सत्यसार भविष्यत हैं।

(६) कर तैयार दोम लाई गहुं किरमब दृष्ट्यों।

(७) यदा समीपन वसिन हूं नौंकि पिठानी जा।

(८) क्यों जभार दी है रहे, वो ले धरातल मोड़ि।

(९) कहुं भोज मागी ली कि काँट की वीड़ि।

(क) बर्मी व्यापक दिन राति व्यापारी है जा यह परं दिन राति को बनता।

(ख) मरे दारिद्र कि दरी विश्वा शहा सही पड़िते चाहूँ

(कृ) रहि खड़ो दृश्य, भिंति शब मू माहरिन गाह।

(ट) सोचति महेणनि उपाधिनि तनं मरी चारि

माहरा स्व महानु क मारते उदारत दैह में।
रीतिकलावृ में उंगार किरणा।

रीतिकलाब नूलः प्रामाणिक लक्षण बन्यों का कह्र है।
ये बन्य रीति के नाम से सम्बन्धित हुए हैं। जिन प्रस्तुत्यां में राज्य के
विविध कार्यालय के लक्षण उदाहरण सहित विवेचन होता है उन्हें
रीति कहा गया है और जिस वैज्ञानिक पद्धति पर जिस विचार
के अनुसार यह विवेचन होता है उसे रीति गायक कहते हैं।(१)
रीतिकलाब की गीता विश्वास के लिए मूलधार रीति के नाम पर उन
रचनाओं को भी ग्रामविष्ट किया गया है जो रीतिकलाब का
समाधान प्रस्तुत करने को नहीं रची गई है। इन कवियों का प्रयोग
साध्य तौर पर कृत्य था। रीति से यदा क्या साधन का आम
काम किया करती है। यदि रीति काल को वृणं काल के माध्यम
कर दिया जाय तो भी वैज्ञानिक तौर पर नहीं होता। इस युग
में शिक्षा ने प्रस्तुत का जिम्मा पूर्ण किया जिस तरह जिसे ने रत्न
धारा मानान्वत की और जिसे वर्तमान काल में नाना नामकरण
किया, नतीजे के बने वर्तमान साध्य कर किले। यदि तत्कालीनजीवन
वस्तुओं में दैत्य जाय तो भी इन्हें रीतिकलाब वृणार ठहरता है।
इस काल के शिक्षार्थी कबीर दरवाज़े ही। कई देशी नर्मों
का
दरवाज़े था। तो कई मुख्य बादशाहों की राजनीतिक रीति के निर्देश
था। इस काल में कवियों के अपने रीति बदल और रीतिकलाब में
इस स्थल ने आधुनिक की मध्यवर्ती पर निर्देश
है। इस काल में कवियों के मध्यवर्ती दी। ये कवि बनके विच्छेद
वन्यीतिक उद्यान से वास्तविक रामायण के विचार, संयोग
वार्ता के भाव दर्शाते हैं। जैसे नामकरण है सबचे साधना था। ये अपने मनमौली के व्यवहार

(१) रीतिकलाब की मूलिका - हाटो नैनीता - पृष्टि ४४४
पर रितिक रहने वाले श्रेम फा पर अधारहर है ने वाले अपनी कृतियों में माति की निर्माण पावन वार्तालाल विशेषता करने वाले माधूर ख्यात माहुक कवि थे। रितिक कृतियों की रचना में हुआ पिा दब गया है किंतु प्लेक पिा उपर कर आया है। राज्यादि पाठा ।

रॉरी कवि जी का काव्य प्रणाली। इसके कृतियों का अभाव में टैप मिथी रास्ते पर प्रवाहित होती थी। पर राज्यादि कवि जैसी भावधारा में स्थल हवा था। बिहारी ही परिस्थित यह वात सिद्ध है कि दोनों वर्ग के कवियों की मात्र में शुभार की एक निष्ठा मधुरि पुराणिक है विपणिक ही। आदि शुभार के मधुरि का ताप राहिल्य में कभी नहीं हुआ। अभाव का ताप में शुभार और विनोद रहे की चारास प्रवाहित हो। महत्त्वदेशिय में पर भस्म ही पूरा पूरक होकर शुभार ने अपना अच्छा पंख पकड़ना प्रारम्भ कर दिया। भस्म ही बीच में गणन के कारण ही शुभार के धर्म वाला राजाओं और विनोदों के हैं। राहिल्य की शुल्क में रोतिकाल या शुभार का कह गढ़ महत्त्व देश आयी है। शुभार में शुभार के संभावन और मिथ्या दोनों ही पदों का सूनदर वर्ण न हुआ है। नावारा शुभा का जपन एक सम्बन्ध के निवारण रही है। (क) रोतिकाल विनाशिता का खा था। सुलत नाबदशाहियाँ की हरम में हजारों जाने में थीं। शाहजादी वारिकानी निभाय थे। सुलत खुलए का घान में सुलत हैं परिवार या

(क) पिझ काल की युर और लक्ष ने माति की चार्म सीमा पर खड़े काल के नी काल रोतिकाल के सौ कवियों के अनुसार के हेतु माति की गंडे नातियाँ में दाल दिया। 'हिन्दी रोतिकाल स्तरितर आचार्य जुलूस'- (११) रोतिकाल में शुभार निर्माण के पूरे ५२ लख)
राज परिवार सरायार था। रूपिकाते के प्रायः सभी कवि कविता
न किंतु राजा के आध्य में थे। राजाओं की काम, मौरी कवितारी
परिपूर्ण सन्तुष्ट अन्तर्गत कि भाव उनके। रूपि के बुद्धार शुरुआती कविता
होता बान गया था। इस सम्बन्ध में डाको फिलहाल बहती हैंकि -
"रूपिका कविता राजाओं और रौशनी के आध्य में पत्ता हूँ यह एक
स्वतः तत्त्व है। वही कारण है कि संपात रूपिका कविता की
गति दी आज़ाद मात्र है। मैंने गजाक दृष्टि से यह निश्चय रूपि
रूपिका के पदक के अन्तर्गत जन आर्थिक धोलना की प्राप्ति करता है। इसी
शासन विवाद में नायक नायिका, उदापन में अद्वै, राज में प्रोत्साह
वारिता, कितने, दूसरे दूत, बादिय है। अनुभव में श्रेरणारे बालाय
परस्पर व लालित, शासन, श्रम, स्वरूप, कपड़े, स्वरूप संभालियों
के उन्माद विच। आफार हर्ष उल्लेख बादिय है। नई आपार रस
के उपरान्त सभी कथाओं का निमित्त हमें रूपिकातान काव्यों में मिलता
है। निशारी गतिराम। अत्यंत, दूल्हा ज्वरम्य, धार, पथकार बादिय रूपिका-
काव्यों द्वारा का कार्य के दोनों पक्षों संबंध और विषयों
का संदर्भ प्रस्तुत हमें मिलता है। संबंध पक्ष में स्वरतिका-से स्वरतिका है
से परेक्षा नाकिका का चर्चा मार्मिक है। रह रहने का नायिका की
भावना में भाव की आवक्षा नहीं पड़े परन्तु परेक्षा नायिका
की भावना में बनक तालाब की बुद्धनी पड़ता है। तरह तरह के प्रयोग
करने पड़ते हैं। दूलिता हे सहायता दैवी प्रकाश है। इसी पर भी सभी
भर्मे नायक की यार पर अजन नायक नायिका है। मिलता होता है।
सी भी या या है -(8)

(8) जोगय रिच विभिन्न श्रीमती के
हार भरी रचना. 

-----------------------------

(8) जोगय रिच विभिन्न श्रीमती के
हार भरी रचना.
गुरु प्राणिक को तारीफ नहीं मिलता है। गुरु के दिशा में हम दूर हो जाते हैं।

संयोगी-पैज़:

रूप सार्न्द्र्य - रूप, सार्न्द्र्य और कान्ति ये तीनों अलग-अलग होते हैं। ये वास्तविक सार्न्द्र्य के परिचय हैं।

इनमें नारीली सार्न्द्र्य तथा अधिक भाव का विवरण दिया जाता है। काव्य सार्न्द्र्य का सारणी है। वास्तविक सार्न्द्र्य का माध्यम दूर हो जाता है। वह जहाँ वास्तविक रूप सार्न्द्र्य वास्तव में नष्ट दूर होती है। इसमें धन्य पुरुष और हृदय नष्ट होती है। स्थूल सार्न्द्र्य की परिपत्रा में आम भूत पत्थर का वर्णन तथा

(७) दिनर - काव्य की मूर्तिका - पृ ३६
रामूर्ति सालिनाथ का वर्णन ये हैं परम्परायें प्रचलित है। सालिनाथ नाथ ने कहा है कि "नहसिल वर्णन दिशा सालिनाथ के वर्णन में प्रमुख हुआ अर्थ है और नह शिख वर्णन मान्य सालिनाथ के वर्णन हैं लिंग छिया जाता है। (७) रोतिकाल है कथियाँ की भाष मुख्य तत्काल है तथा सामान्य अनुपस्थित पर है। श्रीम के वन्दन में कथा कथा है व्यापार के समस्त्थ में जिने विशेष उपलब्ध है जो दाता उन्हाँने नहीं लिया। इनका श्रीम किया मिल्यांत की प्रसिद्ध मायी वाणिज्य में सूचा दुरा नहीं है। यह कथिता व्यक्ति प्रकार रूप में लिकित प्रक की हों हृदय। रहती है। श्रीम सम्पत्ति से श्रीम की चरण देशित के समांज निवेशक और तत्काल अनुदृष्ट्य यौगिकाण्डित हैं। वैनिमोनन ने रूप सालिनाथ का वामिक स्वास्थ्य किया है। (८) मातिरत्न ने भी हरी महार की निवृत्ति दशायां है। (७)

नवरिष्ठः - रोतिकाल में नह शिख वर्णन पर नारी सालिनाथ के लिंग किया जाता रहा है। इस भूगर्भ वर्णन का पूर्ण

(७) काव्यार्चन की मुखिका शालिनाथ - पृष्ठ ६

(८) कानून की वृत्ति तैल, तैन गरीबों, द्वारा शोध कानून जानवित शाही भिंती वोड़, देव तिल शुभ दो नाशिका स्वात सुवात साथी वाहे मूताल्की वैनिमोनन उत्तरार्ज पियों वाहे यह वाहे व्यापी विश्वक सुरक्षित की वैनिमोनन का पृष्ठ ६६३

(९) मातिरत्न अन्त्यायत्न रघुनाथ पृष्ठ ६६४ कृपया विहारी मिश्र।
राधापूजन तथा मैम वागन है। रामचरित मानस के तिब विषारी ने एक दौरे में नस शिक्ष शब्द का प्रयोग किया है। विषारी ने क्रोध का वानन करने वालों का विकाश विषारी में दिया है। बाहुबलीराम सहायता से राधित भी और अनुभवार्थों से खूंटा भी। इसी प्रार्थना भूल साधन्य और मानना वालन्द्र दोनों का निकाय विषारी में भाष्य होता है। ना सिंह करने में वाणी (पर की उगली, डर्दी, सभ्यता पर) स्वतंत्र, लाख, श्रीमात किलक, कर, कर, वियाल, नागिका, नैच, बुद्धि, नस, सामर्थ्य को वीर नाकाविष्ठ हो जाती है। विषारी ने नस शिक्ष वानन का माह जनव चर्चा पर है। नारी के अंग प्रस्तर में स्वतंत्र साधन्य यथा प्रक्रिया है स्नेहित, महीना शारीरिक में अपनी सुरत परी उदम दुर्भिक्ष तो मनोराज रूप में प्रस्तुत किये है। विषारी ने क्रोध बंधु नागिका और श्रीनारायण है स्नेहित कार्यों में विषारी कर कर लाती और पल्लापन हो। दुर्बल विश्वय पर है। विषारी ने बंधु की लाती की बड़ी सुन्दर द्वारा की है।

पुस्त के कार्यों नागिका है। नागिका का मतलब अभूतपूर्व शारीरिक है। यदि विषारी बैठ एवं कौन के बैठे हैं तो नागिका का विषय भी जो स्वयं विद्या है हुड़ने की विद्याओं करने वाला है।

(1) 

(2) कैफ अनियारी स्यान, कैफ मन्त्रिय विषारी।
लाक डिक मौ दिये नासा की डैल।

विषारी सून ४४५
वाक्य तथा काश्मीर दोनों भक्ति के रामन्द्र स्वामी

नैत्रां का रसायन स्वामित्व है। स्रोतक रस में दर्शक महत्त्व सामान्य
रूप से साधना नीति है। संगीत है भाव: रमण किसी के नैत्रां के वाक्य
वाचन और उनके भाव सामान्यको महत्त्व दिया है। रीतिवाल है
भाव: रमण किसी के नैत्र वाचन में नैत्रां के सामान्य तथा
बेदांत वाचन ष्टमें साधन का रूप साधना उपकरण है। इत्यादि विद्वानों
का नैत्र वाचन ता अत्यन्त उपकरण है। यहाँ रामन्द्र
कल्याणों, अनुपादों का सामान्य पूर्ण योगी सशक्त भाषण जैसे
तत्त्व है जिसका हिंदी साहित्य में ही नहीं विश्व साहित्य में
महत्वपूर्ण स्थान है। नैत्र चाहें वृत्तांत लिखित हाँ चाहें श्रृंगार लिखित
वालय कु छ उन्हें विचार संभव कहै।

(3)

विद्वानों की नामिति नैत्र शर ही वैधि में ही उपस्थित है।
सामान्य वाचन जिसी लगती है उनकी को व्याख्या करते दर्शक है और उन्हीं के
वाच करते हैं, पिन्तु इन नैत्र वाचनों का हाल ही कथित है। यह
लगति नैत्रों में हैं, दूसरे में पाण करते हैं और दूसरे कोमों को व्याख्या
करते हैं।

(4)

विद्वानों का अपनी कविश्व में शामिल नायिका के वाक्य
साधनों, दास्रा, पाप, सुभाषित बेदांतों को समयों का रूप वाचन
किया है। एक भक्ति से यह नायिका मैथ है है लिंग मन्त्र हतास
है कि नायिका मैथ की परमेश में रूप वाचन का कार्य कहते साधारण
कथा दूरी करती है वहां स्वरूप स्वरूप भाषा के लिए यह वह खुद
कार्य स्वयं अपनी बार है समयन परे है। विद्वानों ने संगीत के समय

----

(3) कल विद्वान चंदु लिख, मंदन संसुन दैन।
     अंदु ददेव हृदनिता, ददु मंदु नैन।। विद्वान 307

(4) दहन वाचन वैचारिक विचार, बारकी बालन।
     र तैर लव मंदिन, ददेव संसु दैन।। विद्वान 36
भी मरौदारि दुर्स्य उपस्थित नवी है। गुड़क जाने की दबिय
के वाणि में नाशिका भी बनाकर का सुन्दर वाणि है। गुड़कान में
कस टपकता तथा दवाहों की अर्नति का दुर्स्य पर मौलियों के हार
की तरह लिया जाने का सुन्दर मनोग दशहीय हो गया है। (५)

परसरि प्रणाली स्थायित्विक विभा भी दुर्स्य है। (६) रंगिशहीन
शुभगतिक स्वप्नों ने मैथल स्थलों पर नाशिका का रूप वाणि तथा
आंशिपित का उल्लेख निम्न है। नाशिका के एक-एक आंग में आर्नति
की तरह उठ रही है धमान्द के रूप वाणियों में रुफ्तार विभी शरीरवाली
मारी का आदम स्वरूप उठका रहता है। गुड़कान से अकाली और
सती और सुन्दर के निवास अतुलनी कितांतर्कार है। धमान्द के एक स्थान
पर गेंदें दूसरे गेंदें है और निर्रितगण करते सुन्दर की मूडांनों को
उसके रूप के चित्रित अंगों की झड्पिंव में बांधकि जाती है। (७)

देव भी श्रृणारि तवी है। देव ने खूल भाव मनिमाणों
दैंतांव, जो सुंदरतान है भरके समुप्त विकलनहो निवित विनह है। (८)
रसायन भी भी रोमिकाला हृद्याक काश्य का कथा माना गया है।

वे अन्य दैव गान है। उसै काश्य में रोमिकाला हृद्याक की मान्यता, स्थुत हृद्याक का रसरायतन, नामक नक्षिका की अर्थिक व्याख्या, राजि बोझाके के विष उसै काश्य में रहस्यमय करते हैं यदि तत्त्व सूत्रासूत्र स्थुत हृद्याक का साधन किया की नक्षिका उसै काश्य में उपलब्ध होती है।(६)

रोमिकाला के कियां में निकारी चै देव मुल्ल हृद्याकी जयि है। निकारी ने देव से आय: पन्नील चरण भर चितले नक्षिका की है।

रोमिकाला का संयोग काश्य नक्षिका नाशसे से मूल दुःस्वां है।

निदानमा ने मां पक्षीय भी रहस्यमय किया है।(१०)

निकारी ने संयोग का काश्य यथार्थ तथा साध्वी दोनों से व्याख्या की है श्वासायिक संयोग काश्य की नक्षिका की व्याख्या तो निकारी में बहुत भावव हिली है। किन्तु यथार्थ संयोग काश्य कहीं कहीं वातावरणीय हटाल है गया है। (१०) नक्षिका के भूताङूल की हुई रसरी जै दूर ते नाशसे परी की गिरी नानक पाए हैं हो चाल लाये बढ़ा

---------------------------------------------

(६) माणो हे भूरते जो रसायन क्वालक धैर पह बन गर्दे

जै भाग पहुँच धाम अनंत बन बही होगी ही अग्नि स्थानी

जीवन की तह पार फटे रस, वातान तैलि सो तैलियती नाहीं

पान में राधा राज रि है सूज चपर मार तरीक भी हाली।

(१०) नाशित की दूला के भि का कहिये, क्वालक पीटे उपरी हाल है।

की कहु धुमकाय लिन सराय अनुपम के हिलान। (१०) निदानमा

(१) जैि पिन्न गमन ने परी परी सी दूरी।

परी धाम परिहारी कर बरी रस बुट है। निकारी ७०५।
था। उसने दाजुड़कर योग में हो। नारिका कौफड़कर रस खुद लिया। यहाँ नारिका की तो ताजा हुई पढ़ी है और नागक को रस कुटी की पहड़ी है। सूपदर रहुलारिक शिल्पता कवि ने मार्मिकता है साथ दर्शिया है।

मातिराम भी रीत्विवाद की खुमार माधुरी बैठक में कहते ही भरे हैं।

प्रभावर ने नृत्ती वर्णन में संयोग खुमार की प्राणिया ही कहते हैं। (ध) देख ने संयोग के मूलायार पर महाश ढालकै पूरा जाति उत्सुक वर्णन की है। (ध) प्रेम का ऋतु विचरत है। इसकी सीमा में तुष्य की अनेक दुकारा भर जाती है कारण इसकी टी प्यार है।

सुनास्क पर संयोग खुमार कहते हैं। मुख़ ही नहीं पछी पंडी भी संयोग के माजन होते हैं। सम्मान ध्वनि संयोग खुमार का शातिक हो सकता है जैसे माधुर्य कपड़ा की खिसका तक ही सीमित नहीं उसका प्रभाव।

(ध) भैरव हैं राति बनाने नहीं पड़ते हुए में लगा पुनि पात लांघ।

फूल लगो नृत्ती पानी है जाउ; तां मीठा बैठे बाल सुनाए।

फूली पत्ती गरी हुई है।, अच्छे हैरि हिर मातिराम उलाई

लाटे हैं बैल पर मान न दूल्लू, नृत्ती की कहरी पर घर आई;

* मातिराम *

(ध) फाग की मीठा भी रैन रख सक, सुरूशवन्द ले गरै मीठा फारी

माह करन पनी पद्मार ऊपर हारे क्वॉर्ट फारी।

* प्रभावर *

(घ) मासन लो मन, दूसर तो जीवन

है दविं देख उष्ण ैं उर है।

जा हैरि या ज्या मारकर शाक्त समैल पुशा बूझ गई सीढ़ी

नैन नैन बूझ हैरि धी देख हुई हैरि बैन बिसर भोजी

ऐसे अनीसी कहारी बने कहाँ कभी न कर मनमौरने गीती।

(से)
हास परिलक्ष -

(४) श्री नारायण सरस्वतीजी के अनुसार वांगने आया श्री रामनाथ श्रीराम ने श्रीवैभव जी ने सम्पूर्ण जानकारी दी देने वाला है। श्रीराम ने सब से पहले नारायण जी के अनुसार वांगने की सभी जानकारी दी देने वाला है। श्रीराम ने नारायण जी के अनुसार वांगने की सभी जानकारी दी देने वाला है। श्रीराम ने संपूर्ण जानकारी दी देने वाला है। (५) है नारायण सरस्वतीजी ने श्रीवैभव के श्रीराम जी ने सम्पूर्ण जानकारी दी देने वाला है। श्रीराम ने संपूर्ण जानकारी दी देने वाला है।
कुश्य कि राया से भागी मांगते हैं तो राया समय साधू रूपस्त्र कर देता है कि उन्हें केवल के बारे में छू भी देख नहीं हैं और जब श्रीकृष्ण निर्देश दिखा ला देते हैं तो राया जरूर या मिलेंगे में हस देते हैं वस कुश्य को ठहरा ही बाजार है और दे पुनः लौटकर राया से बसी की याचना करने का है। यही सराहन द्वारा चित्र भी विहारी ने घड़ी क्षतिपूर्ति के राय उपस्थित किया है।

देव

मिलन के मार्ग में महादेव, नी ही हास परिहास को ही सुन्दर स्थान दिखा है। नायक नायिका समीप के हैं, सखियाँ समीप में ही बनाए रखे हैं मत्र की एक धारा अभिभावक है जाती है।

(त)

घनांग कवि ने मही श्रीकृष्ण और कवियों के माध्यम से मैमों की कामयाब शुद्धिक केष्टावां का परिर्वतन किया है।

(ब) क्षय नटत रोकत हितत मिलत हितत लक्ष्यात परे मैथ में क्षय है, नैनु दी सब चाह। विहारी ६।।

(द) पान दियां हैं हैं प्यारी लों प्यारी, वहुँ तली होगी माँह मराही।
बाहे गधे लताई लता सुसु नारी रहें सुलकाई विसृरी
तौर हुं न लाज पिटायो गबी जन
देव लिखाह कर जाह धारी
लाल चिरै चिरै दिन में
त्याँ त्याँ चिरै निःसन की बायत हों।।
राधा कृष्ण पर रीतिस्वरूप अपने अनुष्ठान से ताह लोकस पर चरती है।
धानान्द ने रूपांतरण का उपयोग कर नामित करके कठोर बाहर नायक
रूप राधा का बड़ा न्यूनतम बनाने किया है। (7)

राधाने डालन और सारियाबाबा का सजीव विवाद

ि किया है। प्रेमका ने भी ध्वनि प्रस्तुति पर जागरूक सारिक किवांने छायांति
किया है। पत्रधारा ने फूल के लिये भवन पर व्यक्त हास परिहास के
ध्वनि स्पष्टतया एक गट गया है। (7) एक हास परिहास के भवन
का विवेक समान्य भाव वृद्धि के हुए में किया गया है प्रेम के
अन्वयां और भवन के पारितरिक तथा मानक भावस्थिता है।
संयोग अंतर के अन्तर्गत हास परिहास के अर्क़ विवा, विहारी, देव,
पपाकर, धानान्द मूर्ति लेख्या ने अनेक स्थलों पर प्रस्तुत किया है।

विवादो विवादो विवादो

प्रेम के समान्य में साधीन युक्तां है यह विवाद में साधी।

(7) है उनके सुनद न ऋषभ उठन, सट देख कई ध्वनि।
वैन वे बहु नैं बरत, वैलति त्र्याण है सति छधरानी
दान दिले जिन जान न पाये, बाहे है जो वृद्धि लारि निराली
अथे कहीं गाय तो गये, धन भानान्द आज मह भनानी। धानान्द ४७।।

(7) दैविक पपाकर गारिबविद कौ भानान्दमारी,
आई सब चार्क हो ते हावि नित्य रो मे।
है हरि हमारी हमारी बशे मुक्ति को
है नै भिदेहरिन स्वतन्त्र जै किमारी मे।
या विधि बुध के सुनीन मनवाली
नूढु सुनकाय कहाँ नै न के निश्चरी मे।
भाली चलॆ भी नित्यरित नित्यारी गाञ्च
आज तुम कूल यहाँ हमारी हर भिदेहरी मे।। पपाकर।।
ही जाता है। घराका खड़न महाजन्य कार्तिकाद्वार ने मैथुन में यह के मात्रम से लिया है। वियोगवाद्य में मैथ का वाग ही नहीं दीता इसलिए वह राशि पूर्ण ही जाता है। (१)

वियोग मैथ की क्लास्तियाँ हैं। वियोग मैथ विस्तार के लिए बहुत बदतर अवस्था निश्चल लैता है। मैथी संयोग के चारों तरह चाहे तता दुर्गृह विलुप्ति निवृत्तियों से मैथ क्षण न दिए परंतु वियोग के अवस्थीत पहाड़ियों में बड़े पड़ार्धों से मो अभाव मैथ क्षति किराता है। सीता के वियोग में राम लता तक पाती से पता दूरतैः फिरती हैं। (२)

विरह हृदय की क्षण है। विरह ही हृदय हैं पोहों है। विरह जितना तीन होगा मैथ उतना ही सबल रहा होगा। संयोग का माया सुख है वियोग का हुँथ। आनार राम रजस्वल ने इसी तद्युष्ण पर विस्तार से अवचाक ढाला है। (३)

कवि रवीन्द्रनाथ ट्यागोर ने अपने हृदय में विराजित वियोगी का उल्लेख किया है। मत्युक कवि के हृदय में ऐसी कवियों की कौन है और कवि का

------------------------------------------------------------------------------------------------------------------

(१) स्नेहा नादू किमपि सरार्थ अवस्थानस्तै वियोगः
    विष्टे वर्षू न्यू प्रभातिका मैथ राशि भवति॥
    मैथुन उपर नाग पूष्ठ - ४६

(२) ऋतू - काव्य पर्व - ६० - १३४।

(३) यदि वियोग मैथ की क्लास्तिया हैं तो वह कवियाँ का भी विष्टे हैं वियोग की अवचाक प्रकाश में कवि की अवस्थायों की अवस्था रहती है। यह एक काव्य भाव है जो अवस्था अवस्था माना और सम्मान काव्य कला के समन्वय में हो अवचाक है आता है।

*विन्यागिण*
का काव्य संगार उसके रौनक की फलज जाने को ढैठा फिया करता है। विषाल की अनुभूति का स्वरूप शामिल है। इसलिए ऐसा गायिकाघाटी कणा की भावस्था होती है।

रीतिवलातान शृंगार काव्य का विषाल वर्णन सबैध एक नहीं 
पिला का सुक कई। रीतिवलात के काव्यों में विषाल की पर्यायकथा 
कौ व्याख्यात रूप में ब्रह्म कर लिया। पूर्ण में जो विषाल वर्णन की 
बीमार स्थिर हो गई थीं वे रीतिवलात में मी मान्य रहीं। रीति 
वद कवियों का विषाल वर्णन इसलिए एक दृश्य से मिलता है।

और ध्वीनिक उसमें नायिका का मी भना है। रीतिवलात कवियों ने 
रीतिवलात कवियों के विषाल कवियों के विषाल कवियों के रूप की काव्य का अर्थ 
वनाया। एक कवियों की भावना निराशा व्यक्तित्व है। इसके 
विषाल वर्णन में नायिका नायिका की वहाँ रूप है बौधा ने इसी कविता 
की फालकी सीखी है। (प)

यह सत्य है कि रीतिवलात में झूठ नायक और नायिका की 
पीड़ा की शुद्धता रह गई कवि की 'बात्य पीड़ा' दब गई। रीतिवलात 
कवियों ने अपने काव्य में ऐसी वनायार्थी विषाल के विषाल कवियों के विषाल कवियों के 
प्रमाण विषाल कवियों की ही काव्य के लिए विषाल कवियों के विषाल कवियों के 
उन्होंने अनमोल विषाल के फाला स्वीकारी है। (ल)

काल गत्यात्मक है। रस्मचक्र ऊपर नीचे मतवाली है। 
वृक्ष रहता है। सभी दिन हर रहते। शिशिर के शीलमय

(प) हम कौन तरंग पीर कहे गनी 
दिलदार तो कौं दिल दिलाता नहीं।। बांधा ई।।

(ल) संगीती हूँ दर्शक हूँ, इसके विषाल नहीं।
मानसवन चाश्या राधा, तय रहे महान।।
प्रभु मैं उपरान्त मुझे का साधन्य भर लाकर पवन भाला है,
तो बैठना है वाद मृदम का ठीक तैयार देखना पड़ता है। मैंने
जीवन में नाना विविध संयोग किए न मूल्यों पर चढ़ उतरता
है। जहा संयोग की विभिन्न रस फैलता है वहाँ संयोग का विभाजन
विष मी मैंने प्रभु ने जीता को पीना पड़ता है।

अन्ध्राग की विभ्रमिता का रोक संयोग है संयोग नहीं
संयोग कव्या के अध्ययन मार्गिक कितना रोक न कालीन लिपियों ने
प्रस्तुत किया है। भगवान के विश्वास साधन बायां तब तक का
हुआ है। यह तो स्वाभाविक स्वल्प तथा इसरा अतिशयोपि-सूची
एवं अतिशयोक्ति। संयोग जन्य विलक्षणता सबीकता, मार्गिकता
प्रणाली में शक्ति है। (२) यहाँ संयोग के विश्वास स्वाध्यायित-सूची
पूर्व है (३) अतिशयोक्ति-सूची उपलब्ध तथा न नता विशारी के
कारण में शक्ति मापा होती है। (४)

(५) घनानन्द चक्रिन्दा तानो कृष्णस्वर्ग भाग ५ पृ १६३ के पदों से
पू १६३ तक के नमी पद) संक्रमण १६९६ - ८५

(३) कुलानि के पानी परवाँ दिन राति दुख मिलितन कांटे भरी
फिर कोई कर फिर बैठक चार तो धीरज को ठिक करा ठहरी
वह काव्य नाय उपयोग सब सब घनानन्द नहीं नहीं गहरी
विन जान सबीकता कान्न एव झरने विरहा विष की ठहरी
घनानन्द चक्रिन्दा हृद ४२

और मी बही है ५२, १३, ४५, ४५, ४६, ४७, ४८, ५५।

(५) आँध्रे शीर्षी गृहिणी तिरहु वर्ण विललावत
विन हो गृहिणी गुप्तपुर गाँव, हॉटल छू न गात ॥ विहारी ॥
करा विरह सैरी उज, गेल न हारहत नीचु ।
दोन छू ज्ञामा चलु चाहे छू न मीठु ॥ विहारी ॥
संपादक और निर्यात दोनों ही पार्श्व में ब्रह्माण्ड रूपितकालीन गृहस्त स्वरूप की कविता ने किया है। वाराहाण का वर्णन कैल विषाण की कविता में संपादित किया गया है। हिन्दी में पुस्तिका आयार वर्णकालीन ब्रह्माण्ड प्रस्तुत हुए हैं उनमें वाराहाण की यात्रा की गई है। सुप्रसिद्ध की व्याख्या का उच्चतम लोक प्रमित क्षात्रीय हैं। इसीलिए तीन से यह पूर्वाला सातीय में समापित हुए। रूपितकाल के भ्रमण कैल ने तीन के वाराहाण का गंगा-क्षेत्र वर्णन किया है। उनका विषाण वर्णन पीले दस्तीकिय है। (५)
रत्निक प्रिया में तीन के उपर ने क्षितिष्ठ की सीमाज्ञा मार्गिता के ताह रही है। (६)

विचारस्मृति के चार भैंद मानव जाते हैं। पुरुषार्थ, मान,

प्रवास और भवन। कवि का संपादक हैं, उसके अनुसार आकर
कबीर आयत आरा की कविता जो उसके मिलनी की उल्लक्ष्य आदर से है
उसे प्राप्त हुए हैं। गमिलाप्त की भ्रमण काली के कारण इसी
गमिलाप्त है। संपार्श्व का गमिलाप्त की
स्वात में भ्रमण के कारण जो नायक नायक रह जाते हैं वही
मान है। पति के दादाहल या शाप से जीवन में चले जाने से प्रवास
होता है।

(५) ब्रह्माण्ड नीद्रा मूल यथार्थ उपहार मास

(६) हुसैन का नवाब विषय मुख हुए गहरीपर्वर।

वारा तीन बन भिन दावा की बदल
भी बाहुल्या अनल ज्ञात जात रहता परर।

पति ना रहने परर। रूप स्वरूप

उद्योग जनम जात जोर देकर परीपुरन

(६) पुत्र ने दिवस गृह दूल्हा हैं हर विनु

(६) हुर कीर ज्ञात भाषाल सी लातिह।

(६) चार बनान बन बीजन हाल भरते भैले सुनाथ वाय वाय सी लातिह

(६) चार बनान बन बीजन हाल भरते भैले सुनाथ वाय वाय सी लातिह
कविता शिरमः 

इस है वहाँ मृत्यु के वाद में भिलने की 

अशा बंधी रहती है। पूर्वार्ग में क्योंकि भिन्नतावर श्रद्धा रहती है 
क्योंकि वैदना की निरस्त्र माय मूर्धि वहाँ नहीं मिलती। माय 
मी चार दीवारों की बीच एक सीमित दायरे में बैठा रहता है। 
एसले दशम मे वैदना का क्रण चहा रुप अनुभाविक ही होता 
है वहाँ वैदना ही तीन रुप है लिए क्लास ही नहीं रहता। कृपण 
विमल्लम द्विवेदी व्याधारों के संयोग से पतित होता है। 

कैल 
माय श्रं प्रकाश की रैणी विवाह दशां है जिनमे विवाह पता की 
सम्युण सामृत्र का प्रशिक दा सकता है। कवि-विहारी ने 
भावुक की अध्यात्म प्रकाश का वचन शक्ति विवशार से किया है। 

उनकी विमल्लम के दौ रथों में पहला विरास जन्य व्यापारिकता भी 
है।(e) राग मरसा रहने पर पास पड़ों के लोग मे दिग्दो की 
नीं विषाण पाते नायका विरास मे इतनी हबली पतली है गयी 
है कि तथापि न्तन तथा कान्तिकल्ल हो गयी हैं तथा उक्षा नैरा 
वक्ता परिवहित हो गया है जिसे कोई परिवार नहीं पाता। 

विहारी वह प्रकाश है वचन तक ही सीमावर हैं किन्तु भागी दे 
सीगा का अभिभाषा करने उदाहरण कर्मण मे नागी बढ़ गयी है। 

इसमे वें कर्मान्भिकता की यात्रा करते भिली है।(v) 

यह हुसैलता और चरित्रवात का चित्र तमाशा जन गया है। 

अनेकथा यहां साध्य रहता है वही काप्य का उद्देश्य पूर्ण होता 
है। विरास की उत्स्कृत मे रशिबबज रचना कार जमिन से ही 

--------------------------------------------------------------------------------

(र) कर के मोह खुले लो गहर विरह ग हुस्तलय 

gada रामित सिन ते दीति पिहानी जाय।

(ल) दत महादेव चति जात उत चली है सातक राय। 

चढ़ी हिंदौरे सी रहे लो उसा गलि राय। विहारी द९१४।
कहते हैं। धनानन्द शादि कवि जिनमें सच्चे द पीर की वे सिलसाई में नहीं पड़े परन्तु विहारी तो जाने में हो मस्त है।

यहाँ का कई रास्ता कैसे दृष्ट में प्रसिद्ध है अतः उसके नहीं। उसके दीवार की घड़ी से बारिश नहीं जाती है कहा।
कहा की घड़ी साधरण गाँव बांध में विलम्ब की सूचक है।
परंतु यह उपलब्ध उतनी नहीं समझी। विहारी की महत्त्व
पति का आदि का वातावरण शान्तित है। इश्वर की नयी अथवा
धन्यालादिक है।
यह जब जब महिलाएं तो जाता तो पाना सही अग्नि में उसी बानी का सम्मान वह दैत्य है।

सिद्धांत के बागमती का समय है और बांध में बुझाया।
नौ चमक की सुभाष तो रहता है जिसे नायिका को नायक के बानी
का नियम हो जाता है।

वियास में पत्थर और सिरों के भी जैनकिया उदाहरण कवि
के दास हैं।

(6) गीता जलन विलह तिलुं, सहि विकर्षिन तन ताप।
बतियों को श्रीस्म दिनानि, पर्यात परास्त राप।। विहारी 667।।

(6) कलार न आते सहज रघु, विरह डूरे जात।
बब हाँ कहा चलाइए, ललन कल की वाट।। विहारी 205।।

(6) वाम वाह फूट जला जो हरि जीवन मूर्ति
तो तोड़ी जो में कि हों राति दाहिनां दूरी।। विहारी 205।।

(6) कांड पर लितक न जल, जह यदेश क्षात।
कहिहे सब तैरै हियो, वैरै हिय की बात।। विहारी 420।।

कर तै चौमं क्रान्ति सिर उर लाय भुल भंडी।
तदि पाती फिर की लक्ष्मि, बाचति पधर इति समैंट।। 76
निहारी ने बिहार कणान तै कार्यक्रम उरु बिन ता किया है किन्तु फ़ैक था। सिखने कर्मारोग का एकान्त करने में उनकी नायक मानुषी और निरूपण शिक्षा का कारकार वात्स निकाली नहीं बाया है। लियोग की दशाओं का बलात्किल अविवर्ती रचना एक और तो रोकितान हैं। संरक्षण के विषय में सिख लाभ न होता है और जिउरी और धनानंद के साथ साथ दो जैसे कारण हैं। धनानंद का लियोग कणान उनकी माणकों पर, मन माणा की खैलता पर और यहूदी के परिवार का अपना प्रवृत्ति राम रौम में समाये दु:ख विराह की जीत में कुछ रहा है। शाक्तिक दशाओं की निक्ता न वर्ते इव अपने मनोितिभाव को अभ्यस्त करते में एकार्थित हैं। उन्हीं की ती स्थिति है उसी माणकों की माणा 

धनानंद की माणकानक्षत सुखजन निवृत्त है पाणाणा है निरीक्ष था। निव उसी देश देख दै उपार्शु देता है। लियोग की विषय स्थिति ने धनानंद के मनोक को दृष्टिशित कर दिया है। यह एक पैशों गाथा है जो सुलक ही नहीं उक्ति ही है।

(क) यह माण की यु: दशा धनानंद 
जंग की प्रेमता जान ही जाने।। धनानंद ॥ ॥ ॥

(ख) उसी अपनान सुखजन रचनाओं, क्यों के रितीह के को रचनेख। निरञ्चन बाधाएँ हैं धर.मनुराद कर देन, निरीक्षण वितियुक्त धनानंद अपने-बाद उत्तर है, यु:न वाति है माणन है दृष्टियुक्त रूस प्यार के ज्याद बदाय भेद भेद, निकाल में वो चित्त विकसित।। धनानंद ॥

किलावों का रामनाद जह ठार कहैं, जिम्हें होती आसन होती है। कर्मानि यही हृदय का जी जरायत.त.वा निरीक्षण है। धनानंद ‘पायें सुखजन सुनाई’ का यह कर एकान्त मानता है।

मन माण को तारू ही की दृष्टि, पिकलाओं चाने जा जाता है।

धनानंद ॥ ॥ ॥
मन प्राप्त की दस उद्धरण व्याख्याता और विश्लेषण से पूर्ण है। फिर दर्शन की अभिल्प्ता अथवा शाक्तारण्य करणार्यों के साथ उन्हें परास्त है। क्यों दर्शन की च्याखल्ला है माहक मौहन की च्याखल्ला है।

अभिल्प्ता का आक्षेप है उन्द्राद स्वर्ण अन्वत की जन्म

देता है। धनान्द का कथन है कि उनकी दृष्टि तो गयी है, चेतना
विद्वस्त है। इसे उम्मादित कथ्या में हमें विलकूल रहती है।
शरीर में है भिक्षुतार की ज्ञानी निहारा है तब से न जाने क्या हो
गया है हृदय का विनाश हुआ है जल्दा धूत ला गया है।

--------------------------

(व) विन्दु मर्यल तिथि सूर्य मर्यल है। ऐसी रूढ़ मातिन जन्मानी उरस्त्रानी है।
स्थाय ब्रुप्ती दसादिक्का ब्रुप्ती ताँ, ल्याँ ही धन शान्ति सूर्यानिग्नान।

(व) दित शुल्के हु ज्या ज्या है, शुल्के हु हमें सुधि मोजत है
कित शुल्के मूलता नाहिं शुल्क, जो चंत ज्या रूढ़ तीजत है।

धनान्द कविच १६३

(प) मार तेस सार्वत लत सत्य निहारति तारावर नै, निहारति
सार्वत मार तत्तारानी तारिक्षी को, तारा गया हक्कार न तारावर
जै कहू मार ताड़ कीटि फर्र, धन शान्ति शासुर बाहिर निकार
मौहन लङ्का योण की, तनिये रह आर्च्यन में उर जारावर।

धनान्द हें ६३।

(व) सौंभ गह दृष्टि सौंभ गह दृष्टि, रौप्य ही उरस्त्र जफरी है।
मौहन गह चंत चाह कहीं बति, सत्य कहीं तन धार दहारी है।
जाने गह नाहिं जान उसमें तत्कि तारह कहू मातिन ख्यानो है
लौकि हीं गच्छ धनः धनान्द, हेत पसार विश्वा श्रीं पराय।
भाषा की विरह में जो पीड़ा है - सुख एवं वैण्ण है वह -
कातारीत है। जिस भाषा वह पीड़ा जन्म लेकिन उस समय कीको
महत्व व्यक्त होती है, उसके उपरान्त खिलो दिन या खिली रात में
जब उसकी निर्मलता को जानी गई, तब वैसी निर्मलता नहीं हो सकती।
प्रेमनन्द "बिहुरतिनी मीन कौं जो मिलन पहले की " का अद्भुत
साधना करते हैं। (२) मीन बार परलो की साधना बौद्ध की दृष्टि
मेंचाहे फिर्ती की जय होगी पर प्रेमनन्द की दृष्टि में वह इसी नींवी
है कि मुदुक्ष की संयोग विभिन्न साधना का स्वरूप भी नहीं कर सकती।
प्रेम तो भ्रात से बिछुक होती ही मणा में विश्वास्ति लेती है पर
मुदुक्ष प्रेम से बिछुक होती पर उसके सिंह इटपटाता रहता है।
पत्नी प्रेम का रूप को देखकर उसकी झटा या आकृति हाकर अपने की
संगठन नहीं पाता और दीप शिखा में अपने की हिम्र कर फैता है पत्नी
रूप माण को संगठन नहीं पाता। मुदुक्ष रूप तैयार होता है, दरीने
का लिए इटपटाता है बाहु बहाता है और तकरा जब छू बहाता है
मीन बारफ़लो की साधना में बाराथ की प्रकृति है। प्रेमनन्द ने
प्रेम के लिए बाराथ की वरण नहीं किया। (३) प्रेमनन्द की श्रीमान
वापसा चरम वापसा के रूप में प्रतिष्ठित है। प्रेमनन्द के प्राणो पर
लागी माफिक चौट बही गहरी है। उनके प्राण एक
विखित कीवमारण अस्थाया में स्थित है नै की विहा नि मदरी कहानी
पर उन्होंने बही माफिक अस्थिमारण व्यक्त की है। (४)

(१) मार्ग विशवार्ण गये वह तार, यह आदर मीत तथ्याँ तारे
वह रूपमट न सहारी तब वह तैयार तब फिरे बारे
घन शान्तक कौन रानीको दसा माति रावी बारी है हरसे
विहार मिर्ले मीन पहले दसा का मैं शिय की गति को पर्ये

(२) हीन कौं जब मीन कहा कहा रोद मातृकालिन सवारी
नीर मालिका को तार रूले निरस है कायर त्यागत प्राण प्रीति को रीति हु कार सबसे जब मीत है पान परह की प्राणी
या मन की शुद्ध घन शान्तक, बीच की जीवन जान ही जान।
प्रेमनन्द प्राण्याप्त।

(३) जीवन मगण बीच बीच बिना वन्याँ गय
हाय हाय विचि रत्न नै की कहानी है। (प्रेमनन्द)
पनानंद का विषय विचार फासी क्राज्य परम्परा दी समाप्तित है। पनानंद की काज्य क्ला पर सभीता करते हुए दिनकर ने बड़ी वीचेना प्रस्तुत की है।

दृष्टि - विरह के पिताओं में नाथ विरह के चित्रों के रूप में रूपाखारी वक्तु की रूपीं देव का अभिमन्युजना शिला स्थूल्यात्मिक है। उनके नाथ नायिकाओं के बवाल में गारक नगरी फूलते दिखाए देती है। अपनी उवाजिनाता विशाद, विवक्षा, मानापमान बादि साजमानिक दशाओं को नायिका मायार मरियम्मी रीति से व्यक्त करती हुई कहती हैं कि - "साथ में राजके नाथ उन्हें, हम हाथ में चालिया चार चुरी हैं।"

फिर नाथी सादिक विचार है। है नाथ नाथ उन्हें (शातिकग) ही साथ रहें हमारे लिए यही बहुत है कि हमारा साथार्थ बना रहे।

दृष्टि - दृष्टि, दिखाए, दिखाए दिखाए, भार, नागर, लमायार. पहुंच है।
(व) व्यक्ति वर्गों के में खिल, निम ही रूपिया उपरी बरस।।। पनानंद।।।
(य) दृष्टि में अराप का वैक्यातन निषेधन के मन्त्रिप्रमाण में नित लेखन करत है।।। पनानंद।।।
(र) विरह तो एमानंद की पूरी ठहरा विरह के जैसे स्वर उनके हुदाय में निकले बैरोतिकाल के श्लोक के निवेदन में भी दुहूलता से निलंबत है। रोटिकाल की नाकिक विवाहापूर्वी को निष्क्रियाता के वातावरण में पनानंद की पीढ़ी की दीस सहसा की हुदाय की चीर देती है और मन सहज ही मान लेता है कि बहुत तक मानते बाली के बोध यह एक वैद्य कवि है। जो सबसे अपनी ही पीढ़ा से आ रहा है।

दिनकर - काज्य की मुनिका।
हुआ है। प्रवास जन्य वियोग की मेलाया गई रीति में प्रायः नहीं भिक्षु। रीति से यह स्वाभाविक था। प्रायः जन्य वियोग की नाट्यवाड़ा चर्चा में प्रायः भिक्षुवाड़ा रीति से यह प्रायः तत्कालिन को है। प्रायः जन्य वियोग का दर्शन विषय जा सकता है। वियोग में व्याख्यात है कि भिक्षु में निराला को मानना उद्देश्य के साथ देव ने उपस्थिति की है।

बाद अथवा विदया की प्रत्येक श्रीमत सा समक वह है। पर रही नहीं सब यही कारण वह नाट्यवाड़ा विषय वः यह कि उसी की प्रम मुहूर्त है वह समय मूल कर रही है। (२) देव ने वियोगालिनी की व्याख्या दी यह एक दर्शन से मध्य मरस्त इतने की रचना की है। वही इतने एक से एक उपर मायाव का विश्लेषण करते हैं। विख्यात विषय में वियोगालिनी कुल कह गई है वास में अर अर ते प्रेम स्वाभाविक से अवधि की शाखा में नाट्यवाड़ा ने भावण की रचना की है। विरह में कारण नागाक्षा इतनी कृप्षत हो चुकी है कि उसका क्लीर स्वाभाविक रह गया है। परिणाम यह हुआ है कि उसकी हाथ की चुटियाँ इतनी ठीक है गदी कि वे काम के गरें में जा गिरेंगी। यह ऊँचता तिरेक्ता का निर्देश है।

(३) मैथ के विषय मालाएं न मूर्ति न मूर्ति की क्षुद्रकोड़े देव ने देशे की ऊँची स्वाभाविक दृष्टि दुर्गी दृष्टि मानने को उद्देश्य निकल नहीं जिनताएं जिनकी विवाहित तिरिक्ती का फूल घराकृष्ण धरी स्वाभाविक तथा सज विवाहित तिरिक्ती पनी बोधी देव विकिंति ५३

(४) रैतन तो किन तो न विना। जन्माहु चुनावाहु है छाव यान विश्व चारों है। नृत्यादि सज सुशासन दृष्टि दुर्गी, बुध उठे तन बुध वर्तमान जगां राहे है। वाहिरी मीता की हो रहे उन्होंने घर पर देव न मूर्ति बने हैं। मूलानी कि देव में यह श्रीभूमि से शाद जाम बने हैं।

(५) लाल लिख विषयाहु वाहिन वियोग की ज्वालाहु फूल भारी पानी संग पान संग प्रेम स्वाभाविक पान ज्यों प्राण महान। पूरी देव ब भाव मिलापु तो आर्थि को देश विषयियों हाथ उतायें उद्दामन का उतिक्रम गरे परो चार रंगी चूरी। देव।
देव ने 'ष्ठिक्षिता' तथा 'विवेक' विषयों पर आधारित है साथ
वैद्य दो शरीर का व्यवहार करने के लिए है। नाकिकं दिखाए
जन्य वैद्या दो शरीर वैद्य दो शरीर में स्थापित नहीं है। वह विशेष ताप
पराक्रांति हार्थ पूरा दूरकर जीवन देना राहती है यह प्रतिपाक
श्रीमानुसंग्रह का उद्देश्य है। देव ने विवेकीन्द्री के नैवेद्य और योगी
का अर्थ रसिक से पूर्ण बांधकर जन्म उत्कर्ष काल्पक भविष्य का
परिचय प्रदान है जो विश्व साहित्य में भविष्य विलक्षणात्मक है।
(७) विशारद ने भी 'विरह व्यवहार' के 'शैली' चित्र जन्मी
साहित्य के पुस्तिका पर होता है। विशारद का 'विरह व्यवहार'
व्याख्यातिक तथा उत्कृष्ट रूप में हार्थ अविश्वसनीयता है।
(८) विशारद का 'विरह व्यवहार' कहे 'स्थल' पर कथन्त यथा
कहाँक्र तरी है।

(७) श्रीमानुसंग्रह के शब्द के दृष्टि में दृष्टि वहाँ है
 existence परिवर्तन वाला जीवन दूर है।
 देव जू द्वारा तथा वेद पूरी विषय की कथा विचार है
(८) वैद्या वैद्या की भवि वेद राष्ट्रीय में घाय सत्यास भरी है

(८) वर्तनी विश्व फिर से वर्तनी फिर से वर्तनी
धारा में दिन लोपिता अखिल भवि
पूर्व वर्तनी होढ़ा वर्तनी विलक्षणा...
बाये ज्यों च विश्वास लाल दौरे शहरी नटि
पाय है ज्यों तनित चरण में सिंह सजिया
होजिये दुरस 'देव' कोरबर संयोग ने
जौनिम हाँ बैठी हैं विवेकीन्द्री की शस्त्रा'।।
(८)

(८) अभी विश्वास के प्रसिद्ध लेखक रसिक की भी विचार है कि
'विशारद' अविश्वसनीय के 'शैली' शब्द है जिन्हें देव व्याख्यातिक
और उपयोग का भांड पर लिखे हैं।

(७) विशारद सीसी पुस्तिका, विचार विश्वास विलक्षण
विष्णु पूरी गुलाब गाँ दौड़ी हुई न गाय।।
विशारद दूर ९९।।
शालम — रीतिकाल के भृतार्थ रथि शालम की सुसत

रचनाओं में रथि की अनुमतियों का निक्षेप नहीं

पार्श्वता से फिया गया है। शालम का रथि सन्नाटा

स्वस्चित्तता का अभि नहीं है रथि विनियंग के रथि सन्नाटा तौँ

अल्पकोष मर्मरप्पूल, हुद्दमहारी एवं सजीव बन पड़ी है। रथि के

सुखाके में शालम रथि से स्वस्चित्तता का जो व्यंगनी किया

उतारों दशाया गया है कि रथि किण्णा एवं अनबद्धी दो चुकी है।

म्बास ने पूरी बब रथि उसे शालिन बात में है तेजा है उस

सत्य रथि का सत्य का ही जाता है वहाँ रथि के बार बार

मदुरूप या दी यह या उन्नीन मर्मरपूल से दो शालम गाला पर दूल्लू बाले है। ज्यारे रड में

कहा गया है कि गिन उस नारिका का रथि विनियंग म्बास क्षेत्र

अिया रखता है उसी सत्य नारिका के रथि उसकी धार से दूर

ही जाता है। इस भार म्बास म्बारिक शेर गारारी शिष्यविद्वानों

की बादानामा बार दश्तल म्बारिकहारा इंदु गये है। मौलीक दृष्टि

रू म्बास का विनियंग अनुमत जन्म है। म्बारिकाही छठी दीपावल

है कि उठ नहीं सकती एवं न दी बपना शरीर सम्प्रा तत्त तरी है

कही त ती क्षेत्र कोष्ट दीपावल द नियंग भी रथि में है। (3)।

म्बास भिन्तलाभा हेतु रथि विनियंग करनी में सिद्ध हस्त है। बृह्दा

का रू मर्म में उनकी द्वारा कवासे गये दूरती बधानिनिनाद

मिर में मिलन की व्याख्या गया देता है। म्बास अंतिम ताप ने।

(3) धारी संगीत नीत शारति झाँक सहक ज्ञान,

म्बार महार रथि मौलीक मार्कस्त है।

शहरं भायर भादी रथि है हराजान,

निमातु लाख भादी कुद्दमकौ तकत है।
लत्तूरीक वरान यह विलासार क्षमा दर्ते पूर्णगौर है। निम्न के विदेश गमन के कारण अपने वृत्तांतों से उल्लेख किए गए प्रवाहणों अपने स्थान में ही बच जाता और फिर जारी बने स्थाना के पहले में जाने से रोककर। अपने स्थान से ही खींच नमूना महत्वपूर्ण करते हैं शामिल है। निम्न के क्षमा में यह देखा कि अलवा पर फारसी का भाषा भी परिश्रमित होता है।

विरह का वरणाता में कहा। कहीं अलवा पर फारसी का भाषा भी परिश्रमित होता है। विरह के शोभा के स्थान में होता। हर योगदान में उन्हें जा रही रही हैं जो उन्हें होता है। अलवा में रहने जा रही है यह। अलवा में मार भी नहीं रहा गया है।

कहीं कहीं नायक की निक्षेपता लक्ष भी नैम हत का क्षमा भी निम्न है जिसमें प्रेमिका की सीच, रीत और परस्पराधाप शादि मार्ग के विश्वासित हुए हैं। शिशु उपवरण पर्याय खूनी की विरह की दीपित में कारण मानते हैं अलवा। का विचार है कि नये तो प्रेमिका के विरह हुए का शादि बादाने के लिए ही बाती है।

(ु) निम्न विदेश रेखा की सीच भी कान बादि लाग जानि जानि उठन सिंह विरह बसारि है।

(ु) निम्न विदेश रेखा की सीच भी कान बादि लाग जानि जानि उठन सिंह विरह बसारि है।

(४) शिशु उपवरण पर्याय खूनी की विरह की दीपित में कारण मानते हैं अलवा। का विचार है कि नये तो प्रेमिका के विरह हुए का शादि बादाने के लिए ही बाती है।

(व) विच ज्वाला बल यहूद, अब तक यहाँ पारि के किन्तु स्तंभ दशा की तिरतात है।

(१) शिशु उपवरण पर्याय खूनी की विरह की दीपित में कारण मानते हैं अलवा। का विचार है कि नये तो प्रेमिका के विरह हुए का शादि बादाने के लिए ही बाती है।

(२) विच ज्वाला बल यहूद, अब तक यहाँ पारि के किन्तु स्तंभ दशा की तिरतात है।

(३) शिशु उपवरण पर्याय खूनी की विरह की दीपित में कारण मानते हैं अलवा। का विचार है कि नये तो प्रेमिका के विरह हुए का शादि बादाने के लिए ही बाती है।

(४) विच ज्वाला बल यहूद, अब तक यहाँ पारि के किन्तु स्तंभ दशा की तिरतात है।
रसिकान - रङ्गिनक्षत्रिय पृष्टाशिक कवियों में रसिकान का उपाधि अत्यधिक महत्व दिया है। उन्होंने अपने काव्य में संयोग और भित्ति की स्थिति, सतर्कता की होती अपने काव्य में अवधि महत्व प्रदान किया है। यद्यपि विवाह से विवेक भरे पड़े भरसपसते हारे गये हैं। नारिका निम्न विवाह जन्म वैदना से विलायत है। वाड़ करता, विसरता, रॉना, दुःख मताना, उसके अस्थाय विवेर को शान्त करने के लिए कुछ गुलाम जल विह्वक हूँ क्षण की शुष्कन्य प्रस्तुत करता हूँ काड़ आन्दोलन का बाह्य प्रस्तुत करता हूँ क्षितिज है सबी कार्यक्षेत्र विचार ज्ञान में काम नहीं आते और उसकी विवाहार्थिन और महूँ अवतार है। (क)
रसिकान इतने से ही साधन नहीं हारे हैं वे किवारी की अतिविश्वसित से भी आगे बढ़ आते हैं। - विवाहार्थिन की लब जहाँ बुजुर्ग के अंत भूल गया है, तेंत पत गया है और यह विश्वास की लब बाजाराहित तल पहुँच गया है। वहाँ फूस्की को धारण करने वाले श्रेष्ठ नाग के सहकरार के जैसे पते की तरह हिंसने विविध नहीं गयी है।
विवाह की इस श्रृंग में तौ तत्क हितका आ लक्षित है जब विनयतम गते से आव्र लिपट जाय (क)

(क) ऐसे द्वार विवाह कहाँ रसिकान को काउं जारे घे जारे पय भांति दुःख विवाहार्थ भद दिलनाथ पहौँ कहि भी विवाह भी आसन कराँ। (द) विवाह की जो तन अगर तन में तब जाय परी ब्रम्मा जल में विरियत नल ते जल धारा गयी पहले वहै धार्मि गह जल में जत रेत पति सुन काल गह तब शैव जयारा परहें तत्त रसिकान तरं कति आचरित, तब जाय के धार्मि जग गत में।

11 रसिकान हैं 16 11
रसायन भाषा की सुन्दर अभिव्यक्ति करने में रसायन के भुमिका
है गये हैं। रसायन की गौरियाँ की कृत्य के चले जाने पर उनकी
संगत एक सूचा जीवन की रूढ़िता कर देती अपनी कुल में व्यक्त
करतीं भिंती हैं। (अ)

कभी कभी गौरियाँ की कृत्य की रूढ़िता दृश्य, उनकी
मद्दत अार्य समय आती हैं कभी रसायन के सुस्त प्रभावों की याद
आती है और कभी जीव की रितार्थ सुस्थान तिही धूमित घामान
होती है। कहीं नैति में उस रूप में मल्लियाविया का भाषा लगा
रखता है। यदि गृहरात्म पर आती है तो गृहरात्मे ही लाही
हुए कृत्य की मद्दतमिं अवर आतों के भाग बना जाते है जियो
अतिरिक्ती पर असर कर गौरियाँ की कृत्य के मार्ग लगने की याद
आती है। (त)

(अ) नव रंग अपने पराइ दे किसी वह दृश्य आते गई दो की रही
किया मन की मन में हो। रहे हासिया उठ बीच बढ़ी ही रही
तबहु रसायन सुस्थान बली नलिनी दव देव पहुँचानी रही
फ्रिया के नाप जानत है सजना, रजनी बुद्ध लड़ी ही रही।

(त) साफ साफ भित्र दृष्टि दैखती हो, दृष्टि पैशन को मन्याहूं लंकी रो
अंधेरो कान चढ़े मज़ाल सुलाज जीह उँच उड़ती रीो
गौरिया भूरिये चुमँटौरे में जिसी दृश्यात कर री
पालक की निरर हुए नुक्स माना, डूसा तली लपटे रो।
ढायुर - कपिल ने गृंथीनी की विथिय अन्तर्द्वारों का फिर ता
मनुष रूप से किया है उन्होंने उससे तथा राक्षस
क्लिदार्यों की है। ढायुर ने राधा तथा गृंथीनी के साथ धृष्ट
की वियोग व्यथा का वर्णन भी किया है। उन्होंने गृंथीनी के
वियोग वर्णन में मार्ग के विषमता पर अवधि बताया है और
राधा मार्ग के विषय की अवधि पर प्रावश्यकता कहाकहार है। अवधि
प्रावश्यक सिद्धांत, निर्देश, निर्णय और निर्णयी देखें गया है। ढायुर
की गृंथीनी स्वयं यादर्थ विषमत प्रत्यक्ष करता है। (घ)
गृंथीनी कहता है कि रुझान शरीर स्वाभाविक है। गृंथीनी का दृष्ट
तलाशने में उन्होंने किंतु भी विलम्ब नहीं किया और उस दृष्टि
से प्रतिवेदन कर बैठे। वे व्यवस्था विशेषता हो। कठौर कह लेते हैं। (ट)

यदा केवल मन की निरातना की व्यवस्था भर लेती है
और वियोगीनी को अपने दूरी से सम्पन्नता कर लेना पड़ता है। (ट)
ढायुर ने पर्याप्तता शैली में मार्ग वियोग की उक्ति तीन दशा का वर्णन
किया है। (ट)

(घ) वह ढायुर खबर के खबर रूप से वभु का कावळों वे गया है।
मन मार्ग की वित्तीय प्रेमी दिन वार्सिक के लिए दिया गया है।
(ट) हाँ, यदि परिक्षेत्र भी तरीके नहीं है। रूप से अहम प्रारंभ
शुरुआ निवृत्त नहीं राम भिले दुःखिया में गये स्वरूप सुन दीजा।
|| ढायुर है २२ ||
(ट) हन जीवन हावन में परि है, सम्यक यह मंगे वराके है।
पर पीर भिली बिद्वान की व्याख्या, पितृनिबें बद्दा बारक जानत है।
|| ढायुर है ५६ ||
(घ) थरीन में नैन भुकू उनहीं करा, स्वप्न मार्ग के जाते पर।
मिन वापसी के अभी गये वती अंधुरीन है परितम दाहे पर।
कंव ढायुर रखी कायम निःशरीरित करूँ के क्षति पर।
मिन भाल कर्न जरूर इतनी किन देखिए के बकलाले पर।
कथा ने गर्विंसियाँ (मॊक्कितासी) द्वारा जहाँ गुण्या की हति, पतरों, पूजा कार्य विनायकक्षयों का सृजन क्षय है जिन्हीं हो वें स्वयं सैम की संन्यात्त तत्त्वत है (३) वे गुण्या के साधन सैम की दिलिना करती हैं और अन्यता के साधन उदिनिमासी रहती है।

गर्विंसियाँ जैसे कुछ उदिन, सीम वार्गावर और निर्क्ष वायुमण्डितर ज्वालामुखी के पूर्गारक क्षय की ही गिरा से उद्धुत हो जाती है। गुण्या गर्विंसियाँ के अवधिक नमी में हैं कि निय उन्हें तार्क व्यययों दे उन्हें वे चुलसाय सहित हों।

वे चुनान्त्र की माती बनी गाथ्य से समकालेका कर लेती है। (प)

मॊक्कितासी गर्विंसियाँ का व्यिीयत वियाग की शायं में छप कर बारी भी निस्सार भाया है। मन शत्रुक्षरिकीयों में कौन और भाय वे बैटिस्याँ भेम दे जिन्हे ही यही रोप सही के लिए लैिंयार है वे भीति में मान तथा तन्मय है। मयक्के विरह और दुःसह पीढ़ा की रूढ़ि और अरुचिक विस्तार के बीच उनका नाम ऋष मा हृतिभी हतास नहीं हौँता। वे पीढ़ा से नहीं हारती उन्हें मानव से न्याय में प्राण विश्वास है। (त) ठाडुर ठाडुर में जात के सुन्नर ऱूपों के वशीत है।

(प) ठाडुर ठाडुर दोषक दोषक न उन्हें हम लीन्हों है अपने घाट ही बीरों

(ड) विशाल वो कृषित बाय दुईँ भर एक हो रंग रहती निरल ठाडुर, 

(त) काहे वो मन साहस होइं, काहे उदास हो देखत तवः रूः 

वे सूत वे सूत भाय कह गुण, एक ही रीति सही नहीं रहे है

ठाडुर कारों मारीसा कहे, हम जा जा जातन धूल ने.एह

जाने संयोग में क्रप्तिहें वियाग, वियाग में सही का संयोग देखे।
वौँ ने — रूपालित पौराणिक कथियों में वौँ व्यक्ति निष्ठू कही है। कपनी कल्लुनाम और विरह वारीश में उन्हीं क
कपनी विचार दस्ताँ है। वौँ ने की मैस व्यक्ति में दृढ़ तत्त्विकता है।
पौराणिक का भावनार कहीं नहीं है। उनकी मान्यता है कि "विरह
व्याख्यान मन ही मन सहन करनी पड़ती है उस कथारे विचार वैद्यन की
वातने वाला कहीं नहीं। मन वाणी की तरह माघरे कैसा दिखाता
है; जूह से दूह वाती नहीं बनता, वाणी वल्लक्क हाँ माघरे है, वाणी
डुलक्का जाती है; जूह उड़ जाती है।" (२) रूपालित पौराणिक
कथियों में वौँ व्यक्ति सहस्य और मैसी जीव के समस्त समझान के
वातने पर निवारण के। उनमें विरह की रामना वेदिक तथा जैसा
कि उन्होंने एक कथान पर स्पष्ट कहा है। (३) रूपालित के समस्त
पौराणिक कथाओं व्यक्ति की दशा में पूरी सम्पत्तियाँ को
भावना है। नैवारी के पुराण का पूरा अर्थ लेना वैद्यन का
विशेषता कल्लुम लघुत्व वाला कहना उकसाऊ जाना इसकी प्रतीकता है। वौँ
ने कहीं कहीं विरह वैद्यन के उद्देश्य स्त्रोत का भी विचार किया
है जहां कृत्रिम रूप पौराणिक के बाम तथा प्रभृति में परिवर्तन होने के

(२) यिर्द वास्त तीट श्वू मुस मीट
जब मैं हिय में यह बान कैसीं।
तिखाकुल कत ती कैसी परे निरर्प, जिनकी है
कूलके शांत कैसी ॥

(३) वात नहीं समुश्चाय खेल यह पोर हमार न जानत कौर्नी
वौँ वाक्कत क्षम वही, वाह तसे जिसमें जत वैद्यन हाँ॥
कारण विद्वानों की उत्तरादेश कुछ कठिनता का स्वयं दैत्य जा सकता है। पावस की स्थायी धरार धुमरा भाली है। चित्र घरी हो उठता है और मिलकर पर उठती है। (४) कौंदा ने वसन्त के उद्घाटन का भी वर्णन किया है। उनकी वियागती वसन्तागमन पर काम ज्यादा से प्रशिक्षित विश्वासी गया है। नाम, कौयल पलाश के सहारे वसन्त का वातावरण प्रस्तुत करते हुए उनकी उद्घाटन शैक्ष का वर्णन किया गया है। कौयल की मोही वाणी विद्वानों को अनुसरणा पहुँचाती है। (ज)

पद्माकर - रीति काल के महलक एवं कैलखाल समय रोक्तरात
-----------
कै रस्त्त रसितीपि कै पद्माकर इत्यादि च "कौयल"
जिन्हीं ने कवियते हुए सब ने कौयल की कपनी कराया का
मध्य एवं मनाया वाणी विविध कराया है।

(४) कौयल पावस यथाय पलाश उन्हों वर्ण, में मन हीर कठिनाई नहीं
पुनि वाहिनी घर फरीदन हो, सुनिंग वचन चित्र घरीते नहीं
जहाँ नित्य वही बायरा हिन्दू तब ते दर याह घरीते नहीं
हम वान साँ पॉर कहे कपनी, दिलार तौ कौयल दिलार नहीं।

(ज) कौयल का फल तेरी कुट्रार की वाणी ली, पर कपनी के घर रही।
यार्क तरी कह सुन फिरी कवि वायरा तृषी का पक्षत लिखी।
स्वाराय और पराराय को जस, तैरे कौ दूर हाथ न रहै।
तैरे कतौर विद्वान जै कहे दूसरी वैदिक में लग गई।
पद्माकर खूंट गुरुरी कवि थे। पद्माकर का सपना जीवन
एक विद्वान का उपमें फिता या तकता है उन्होंने बताया गया। ग्रंथकार में कौन सा स्मृति का निर्माण किया। पद्माकर में शृंगारिक रचनाएँ हैं गायिका की अनुभूति किया तथा सन्न्यास काल में माता की पवित्रता बहार। परन्तु शृंगारिक रचनाएँ का आधिकार होने के कारण उनके शृंगारी कवि हो माना जाता हैं। वे रूढ़िवादीविश्वास मान्यता है वे मनोभावों की अभिव्यक्ति में कूशल मिही है और तफ्त मी। जीवन के शिविर में 'व्यापारो' की निकट से देखा है श्रुंगार का रथायपाल रति है और प्रेम का 'विकास विनिमय रस्ता' पर भिन्न भिन्न क्रमागत से होता है ऐसी कविताओं का अंडन विशेषता चरित्र और लक्ष्यता के साथ पद्माकर ने लिखा है। (च) प्रेम भी बढ़ी पीड़ा
श्रद्धा है पद्माकर ने विवरण श्रुंगार का विशेषता और व्यापा बढ़ी
लक्ष्यता के साथ है। (इ)

(च) पर न सुहात ना सुहात का बाहर हूँ
बाग न सुहात नै सुहात सुहार हिं। सारंभे न सुहात न सुहात हिं। मायारे यह वात बताता है। ताहीं साँ।
रात न सुहात ना सुहात परात बाही।
जब मन तारी जात खाद निरमाति साँ।। पद्माकर हैं ॥ ॥

(इ) माँह ताज माली मिलता है मन मैत्रीसंहं, नैनध भिंदा है देखे देखे सारंभे।
हिं। फूलमला फूलमला खिस्मती फूलमला मंदिरी स्वरं।
तै तै निरदेशे दी चक्रों क्या न वर्ष, रूढ़ि क्या दी गृही।
केशी दसा महुं मेरी हैं खुशः पराघी पीर।
हाँ तो ममुं ही मन नैन है। नैव जौं।
माता के माता तारी जानी पराघी पीर।
चिरागी न है चिराग ज्यादा ताप हतना खा चढ़ा है
फिर उसके एक निःस्थास घर गरिलार को एका छूटा गारी जो मी उसकी देह का रूपरेखा कराए उसे मी विरह ताप जा जायगा।

शैम विलेकण है शैम मान्यता क्षीम है। उसका शहीदत्व अन्य शहीदत्वधर वाचक की विनिष्ट हर रूप है। सम्प्रभु चुम्ब शैम रूप विलेकण के शैम है। गारा संगार शैमक्ष क्षे जाता है उससे परे उसकी बिला कुह भी नही बह जाता पद्माख ने इतनी मनाराती दुख अंडित किया है। उनकी मार्गी विलेकण उनका वियोग जन्य वेलना में दलतो है गयी है।

रोटिकार के वजिया ने वजिया शैम सम्बन्धी दलन का निर्माण नील न किया। इस घारा का मल्यक कवि शैमी था।

शून्यातिक था।

(य) दूर ही ते केवल विश्वा में वा चिरागी दी है
अर्थ मे सार्विक दूरी द्वार बढ़ा जानले रिहै कहे पद्माख लुत्ती हो धनस्याम जानि
क्यों जय है एक कारोत बढ़ा जानले रिहै
सर सर जानने कान मूल लोगी दैर
ईसी कहे मूलतान ज्ञाता बढ़ जानले रिहै
तान हेतु ताप के कहने में बहा बात नहीं
पातलै हुए तो तुम्हें ताप बढ़ा जानले रिहै।

(र) और मारी रुपित जुनिन में मुखुंद महर मीर
और फार फारीन में बाजन के है गये
कहे पद्माख यू और मारी गतिमान
हिला खुबांते हैल और हानि जी हरे
और मारी विश्व वाम में क्षेत्र हैली
रैसी खुदाज के न भान दिन है गये
और और और रोटिक और रा रा और रा
रैसी तन औरे मत औरे मत है गये।

.पद्माख हू।
रीतिविभाग कवियों का काव्य सुजन दो वर्ण एवं दो मात्राओं का प्रति निर्धारित करता दिखाई देता है। पहले वर्ण के रीतिविभाग कवियों ने शृंगार का वर्णन कुछुदुरुप में किया था और दूसरे वर्ण के रीतिमुक्त कवियों ने श्रेष्ठ की फारंगिया सोचती है। रीतिविभाग कवियों ने अभाव के परम्परागत चित्रित व्याख्यान के उदाहरण के लक्ष विचार और रीतिमुक्त कवियों ने रुप के प्रति लक्ष का कार्यन विलिंग किया तथा ही श्रेष्ठ वर्णन की उदर्श किया है। रीतिविभाग कवियों के रुप वर्णन में मानसिक यूनिट का विचारण ही संभावित पाया गया है। रीतिमुक्त कवियों के रुप वर्णन में शृंगार के मानसिक फल का और रीतिविभाग कवियों के रुप वर्णन में शृंगार के शारीरिक प्रकाश का वर्णन विशिष्ट हुआ है। शृंगार के विभिन्न त्योहार पर धार्मिक व्याख्यान के वर्णनों में मानसिक काव्याश्रय का वर्णन विशिष्ट हुआ है। किन्तु रीतिविभाग कवियों के विभूषण वर्णन में शारीरिक ताप, अनुभव, शारीरिकप्रकृति सादृश्य का विशेषण हुआ है। धनानंद, रसानं, आलम
तथा ठाबूर वापसी पौर्वक तथ्यकुल वगन धुमा है।
भैया के समय भाव समी प्रभाव के व्यवहार द्वारा सही उत्साह से भैया उद्धुत किया जाता है। घानन्द तथा रसायन के प्रभाव तथा मार्ग दशाया है।

(ग)

ढारे नौन्न ने श्रृंगार वगन की निस्पात पर विविधापूर्वक प्रभाव दाले धूल लिता है कि "श्रृंगार में शास्त्रीय गौरव भवन दमन में उत्पन्न न बनिए के सावधान हैं। उनमें स्वीकृत रूप से शरीर धुम की सावधान है जिसमें शास्त्रीय अर्थात्तिकआ का वारांप होता है और जो वासना के उत्पन्न भवन भैया भे की अतिन्यंत्रित रूप देना का उचित अनुकूल है। जीवन को विप्लव उन्मृत सामाजिक अवस्था से चाहे चंपिल रही है परंतु स्वागतिक शुभारंभ से वे युक्त थीं।
हयी कारण इस धुम की श्रृंगारिका में मानसिक हल्का, नहीं है।

(ग) भैया लीसौ सन्तान के साथ है जहा नेशु स्थान पर नहीं

(१) तहाँ साथ चाहे तंग भावपन पर
भी पर कप्री विद्यार्थी निरक्ष नहीं।। घानन्द

(२) हुक अष्टि निज़ु कारणहिं इस धुम सड्ढ प्रभाव।

(त) देवी महालक्ष्मी की पूजारित हेतु धुमभें प्रभाव।। रसायन

(त) रोमांचलिती शरीर रस का प्रयोग।

राजेश्वर प्रसाद कुलरेण्ण।
राजेश्वर प्रभाद कुलवीदी ने कहा है।

जीवन की अन्यथा रचना में जब वे लौग घररा उठते हैं तो राधा कृष्ण का वह दुरार उनके भर्म किंवा मन की भाषासन कैसा होता है? इस प्रकार रोपितालीन महिला एक और तो सामाजिक और दूरसे और मानसिक रहते भूमि के रूप में इसकी रचना करती थी।

रोपितालीन वृत्तारिक कवियों का प्रति पाहिज़:

सततान का चरण - काव्यविद्यासार में विभाग वस्तुत: विभागिताना

जहा तक कुसुमति प्रभाद कुलवीदी का रस है वह विशेषण और अर्थ, 
उसका दूरसे है। दूसरी मासाचैत के चरम पराशर की उक्तियाँ
कला उपकरणों की जागरूक् भाषाओं की बिना ही कलाकृति धारित हैं।
रोपितालीन वृत्तारिक कवियों का नाम हिन्दी वारित तथा विद्यासार में 
स्वरूप अनुभवकल्पक के कारण ही सारथा हो गया है।
भाषायी जीवन है तत्त्व वृत्तारिक भाषातत्त्व के चरम दारा उनकी
कला में संरचना है ऐसी रित्तति में अभिव्यक्ति के विचित्र उपकरणों
का उपयोग, विशेषण कल्पना तथा परिवर्तित होता है ऐसे प्रति 
वाल ऐसे नहीं है।

कला अल्मा की उन्मेशता - काव्य में भूमिति तत्त्व की बहुत

रोपितालीन वृत्तारिक कवियों की कला वैदिक वल्लभिक उन्मेशता तथा जागरूक थी।
उन्होंने कुसुमति के पारिपार्श्व में भन्ना तत्त्वों की बन्नवायता स्वैयारी है
उन्होंने केवल मानवीय के चरम अभिव्यक्ति को कला नहीं माना है।

(इ) रोपितालीन महिला एवं कृष्णा रस का विवेचन।

|| राजेश्वर प्रभाद कुलवीदी ||
उन्होंने स्कीकारा है कि उनके की तीव्रस्त्राप्न, अलंकारिक सौंदर्यात्मकता और उपक्रम मानसिकता के कारण काव्य अग्रिमार्थार्थिय और अनुमूल हो सकता है किन्तु तद्व ज्ञात स्वामार्थ नहीं हो सकता। परन्तु ज्ञान विभूति में जोग्यता के अनुयाय्य की सहायता के किना विविध स्थलों पर एकतित पौराणिक गोविन्द हो गया है। रीतिकासीन अनुरागिकः कवियों की रचनाएँ स्त्राप्न हैं की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं इसे भी उल्लोच्य एक रस और पौराणिक नहीं है पाया है। रीतिकासीन अनुरागिकः कवियों की दृष्टि है रमाकथा में व्यापकता का भास्मर रहा है इस ग्रंथिका की प्रथमवा दैन वाले के तथा उन्हें जीवन दृष्टि में जीवन है व्यापक और वार्षिक तत्त्वों का भास्म होना स्वामार्थिक ही थी पर इन रचनाओं की स्त्राप्नतत्त्वता उस अर्थ में सीमित नहीं है जिस अर्थ में अवलोकन है काव्यों की ही लक्ष्य का स्वतंत्र अत्योपक भप माना जाता है।

नायक — रीतिकासीन अनुरागिकः कवियों है काव्य का मूल भाषाः अलंकारिकः भाषा था। उन्होंने अपने काव्य में कृष्ण काव्य परम्परा की पोषण दिया है। उन्होंने कृष्ण काव्य परम्परा के प्रतिपाद की स्कीकारा है। भागवत जैसे परिप्रेक्ष्य निष्ठा की कथाओं में कृष्ण की कथाओं के दृष्टि में पानिकर काव्य रचनाओं की है। निष्ठाकार मत से प्रभावित रही है और वृहद के बन्तवाल हूँ अर्थ की वास्तविकता में उन्होंने कृष्ण की रायकलाओं की भाषा माना है। उन्होंने गृहिणी की दृष्टि में मथित की महत्ता बहुत स्कीकारी है। उनका मूल विश्वास लक्ष्यिकः पत्र के माध्यम से अलंकारिकः पत्र की स्थापना रहा है। वे ग्रीष्मकाल की अवृष्टिकृत भाषाः पारिता में बिभिन्न विश्वास करते विशाल हैं।
शास्तर का पृष्ठांक है -

रूपलीतहीन शृंगारिक कवियों का भाषण का एक भना-भनाया रूप महत्वपूर्ण है कवियों के माध्यम से तय मिला ही साथ तात्त्विक प्राप्त ऑफ़ कवियों के माध्यम से प्राप्त हुआ।

हाँ हरभंसलाल शर्मा एवं दाहर सुशीलराम शर्मा ने इन तपूषाओं की पूर्ण अपने शाहच आवश्यक में की है। (३) पर्याप्त भाषा में कृतियाँ तीन सम्बन्धी ऐसी वांछित मिलती है जिन्हीं रूपलीतहीन शृंगारिक कवियों को पूरी चर्चा साम्राज्य है। युद्धद्वार, भारीका, गोस्वाम, महराजा राजनाथ, शायद बन, शायद की विकृति पर्याप्त में मैं उसी का दृश्य रूपलीतहीन शृंगारिक कवियों में मिलता है। पर्याप्त पर्याप्त के ६५वे संध्याक प्राकृत स्तांत्र तक से श्लोक १०२ तक में श्रीकृष्ण के सात-स्वर का वर्णण है। इसमें आश्चर्य गया है कि "

(३) उनों नीसर्द शैरियों है समानसंती भन्डू कुंदका निवासिक धनदेव रे समान भावेत, राजनामा के समान ज्ञान, ज्ञात गर्यो, शिक्षा नीति तृटित एवं वारिक सम्पन्न व्यस्त, भुवन, डुकुड़ मणि माणिक्य की फिरिमूरण, चन्द्र के समान भक्ष मनद, मस्तक पर गौररचन के सुंदर कस्तुरी का तिकल नील धनदेव रे समान विशाल नै, सुनहरा वृन्द एवं सात-स्वर कम्युन नारिका का वार, वर्णास्त्र पर जीवकल्सा रूपक प्रति - उन मौलिकों का हार,

हाथ में ककण और तैलर काटी में उक्तियों एवं कदृङ्ग कस्तुरी
यशोदा पोलाम्बर शारीरिक है। उन्होंने वक्ता स्थायी है।

(६) पायेन नूरुर मधु लो काटि किदियन में छुन की मुदराद है।

(६) पायेन नूरुर मधु लो काटि किदियन में छुन की मुदराद है।
वार वैरां नूर है रति कैलि ने सतादेव में नैस छूल है रहे है। चौथी क्षार रोक्षातीन सूरालिन किये रायहा है सानार्य चित्र में पृथक्षिप्त वर्णांकों में प्रमाणित है। उन्होंने राया के स्वारूप भिन्न का भी परमार्ग गायर स्वीकार है राया कार्निलक रूपांक की माता के समान है। नीती चाँदी पहिने हैं पत्तुपुल से अर्थ बावर कौमत काश्त मुख कहत है। ब्रह्मती है समान चंदन नैव शैक्षणिक है मैदन वन्दा पर लग जहू है। अग्नि शार तदनी है वारा गुरुस्वत पार्थ गुरु वारा सम्भवत राजार्थ शैक्षणिक को समर्पित रही है। उनके लिए नैव वारा उपर मुखाता शैक्षणिक एवं रहत है। वह विशिष्ट जाल है, मन्त्र चारिणक की तथा भूमाणि है। रेतनों के तारक, भार, पुष्प और कंप्न पारा गायर कहे हैं। गंगा की अक्षिण या रेतनों के मंजीर है वह लक्ष्मी की चार और संवारण सुन्दरी है। शान्ति में मन राम नक्षत्री राया की कीवा में चाहर और व्यक्त निर्देश उत्ती ताजा समान शायू और गुरु वाली साक्षात का लगा हुआ है।

उपरोक्त कींकरणों से स्पष्ट है कि सिद्धांत और सुधाम वैद्यों की पंक्तियाँ में कबियाँ हैं। पार से युद्ध शाहा और जो राजस्व बनी लीमा तत्क प्रवर्तक की लीला है। हृद निर्माण के लिए रोक्षातां में उद्धारयित है।

अवार्तक मानविष्णुविभिन्त में शिला तत्त श्राद्ध का स्थान -

किस गूण या क़ौल है माथ्यमै वस्तु में उपयोगिता और सुन्दरता का बावल है उसे क्षात कहते हैं रोक्षातां के कवियाँ की

(२) ६० महात्माघर्षन और यूर साहित्य - पृ ४२८
हराम सुत्तिराम जगू
रीतिकलातीन श्रृंगारिक कवियों ने पार्थिक कृष्णा के वर्णन में राग और रन्ना का संयोग करके उनकी स्थायी दृष्टिकोण रचना की है। एक विद्वान के अनुसार, आदर्श और मान्यता के किए हुए रूप वर्णन में रप्तानियत किया है। उन्होंने धीमी और अल्प बल की भरतीहरू है। उन्होंने कृष्णा के विभिन्न रूप्यों में से विशेषतः रूप का वर्णन अधिक किया है। इन कवियों की अनुमानित श्रीगोमती के प्रति मनुष्यता से प्रति मुक्त छुपी है। राजस्थानी उसकी स्थायी दृष्टि या सिद्धांत लक्षण नहीं थे। राग और रन्ना का संयोग करके इन कवियों ने अपनी श्रृंगारिकता रचना की है।

उन्होंने रागाश्रयूं के परस्पर प्रेम की मायने भरा मध्य में चार भक्त की रचना करते हुए कायम में ताम्र और नायिका के प्रेम व्यापार के श्रृंगारिक विवरण पर दशा थी।

सादिक वत्सल और रीतिकलातीन श्रृंगारिक कवियों के दृष्टिकोण

में वेतन:

रीतिकलातीन श्रृंगारिक कवियों का श्रेष्ठ है। लैस अपने मिस्त्र की लीला में योग्य है। कृष्णा या राया की
प्रतिक मानकर उन्हें माध्यम से भाषी निय से प्रति बापनी अनुमूलकियों की भिन्नता करना उनका उद्देश्य था। (६) साधारण कलाकार संस्कृत रूप देखते अधिकारक कलाकार के पूर्वकाल की प्रथाना देता है परंतु रूपसागरी मुख्य रूप से यथार्थ से माध्यम से विशिष्ट विश्वास की संबिंधितता कलाकार शैली में प्रस्तुत करता है। वह मायावती साहित्य तथा संस्कृति से विश्वसनीय है। उनकी काव्य ज्यात धरा कुण्डरा राग मधुन है। इन कवियों के काव्य कला की मान्यता है तथा इन्हें मुख्य रूप से तांत्रिकता एवं म्यानकार शैली में स्वीकार है। उनकी लेखक की भी मायावती रूप में रचना उपलब्ध है। इन कवियों ने रूपसागरी अनुमूलकियों उन्नयन द्वारा नये माध्यम बदले हैं।

काव्य साहित्य में बाध्यक किया विश्वास और रागतत्त्व का संयोग -

रूपसागरी मुख्य रूप से कवितावर्तमान विश्नाय से मध्यें और रागतत्त्व की संभावना के कारण उनकी वृद्धिकृता के अन्तर्गत मध्य द्वारा काव्य का विश्वासनीय विश्वास का संबंध नहीं है। काव्य की साहित्य पद्धति में मायावती रूप में विश्वय में यह स्विश्वास निर्देशक विश्वास पूर्ण अनुमूलक 'मूल्य' रूप से पारंपरिक गान्धियों (गान्धियों) का यह माध्यम मुक्त रूप में मालवा के स्वीकार का यह माध्यम बदल सुधार मालवा के स्वीकार में जाता है। मालवा के पूर्ण विश्वास जन्ता राग ए और विश्वास के निश्चित अनुमूलक न हैं। और गान्धियों के पूर्ण श्रवण की भलवानी है।

(१) दूर पनानन्द वनस्पति चलो, तथा शालम ठारू की पत्तिया की चित्ति।
रोक्तकालीन शृंगारिक कविता की सुजन प्रशिक्षा :-

रोक्तकालीन शृंगारिक कवियों की कविता प्रशिक्षा का रूप 
रायारण प्रशिक्षा से मिला है। उनकी सुजन प्रशिक्षा दो उपस्थितियों 
पर स्थित है। - 1 अपने स्मृत व्याख्यात का गौरव शान्त गौरवियों।
का व्याख्यात के साथ लाठाल्म जो कैलं आनुभूति और कल्पना की 
कल्पना के स्तर पर मिली प्रस्तुति की प्राप्ति। घनानन्द में वे दोनों 
तत्त्व युक्त रूप में दृष्टिपट्टियों होते हैं। यह स्थिति में शृंगारिक 
कवियों में सहज ही सम्बंध हो सकती है क्योंकि वह रिहातिर पूरा 
कल्पनात्मक तथा समूचा नहीं था आधारपूर्ण रूप में विवेक की। 
रोक्तकालीन शृंगारिक कवियों की रचनाओं पर मानकतायों 
की रचनाओं का तथा संस्कृत की रूपाण्व में वर्णित शृंगार राजा की 
शृंगारिक तीतरों का जारी रूप मानव है। उसके यद्य तब 
रूपाश्चर्यानुसार गावा का व्याख्यात फटी दृश्यता तथा दृश्यता से 
किया है। इस तरह रोक्तकालीन शृंगारिक कवियों का आधार 
में अनुभूति का साथ कल्पना तत्त्व का आधार है। उनकी अनुभूति की 
कल्पना और वैचित्र्य विस्तार के बायार पर मार्ग मिला। कहीं 
कहीं उनकी रचनाओं में शृंगार शालकारिक आरोप मान रह गया है। 
रोक्तकालीन शृंगारिक कवियों के राजा में कैलं अनुभूति तत्त्व की 
प्रधानता नहीं है अतः उसके बायार रूपरे कल्पांपूर्ण
हिंदी कविता का सौभाग्य मैं तर्स में मजबूत रागतर्ल को कपनी यात्रों में मार्गक रूप से मुहरित किया है जो तीव्रता लिये हुए है। हन गात्र कवियों ने कही सहजता के साथ मानव सहज सापाराणताओं तथा तलाफकारी का स्वतः अनुभूति अनुमूलितों का भौगोलिक रीतिः के विस्तार किया है। अनेक स्थलों पर जीवन के पूर्ण मौसम का स्पष्ट सूक्ष्म मिलता है। उनके भित्रपात का मुख्य आधार कृष्ण लौफ़ अन्यत्र नायिका है(१) और कपनी राधा कृष्ण है। हन कवियों ने व्यापक दार्शनिक पुष्पमूल की अभिव्यक्ति लौफ़ अनुमूलितों के सहारे पारंपरिक की भत्ता कल्पना के सहारे किया है। इस तरह उनकी रचनाओं में पारंपरिक अनुमूलितों कलात्सक अभिव्यक्ति के साथ अभिव्यक्ति हुई है।

दृष्टकृतियों की विविधता से हन रीतिकालीन पृष्ठारित कवियों का भित्रपात को निम्नाक्षर मागत में विस्तारित किया जा सकता है।

अनुभूत्याल्पक - दार्शनिक, विवरणात्त्मक, रीतिऱ्वल्पक या

भित्रपात का अनुभूत्याल्पक रूप :-

रीतिकालीन पृष्ठारित कवियों के अनुभूत्याल्पक भित्रपात की दो श्रैणियाँ बनाई जा सकती है। रागमूलक तथा अनुभूति श्रैणिय कल्पनामूलक।

(१) वर के कवि रीतिः है तो कविताओं नदु
राधाकृष्ण कपने की कपनी को वधान है।
प्रथम वर्ष से तारापद्य उन स्थलों से हैं जों कि रचि राधा
या प्रेमिका के साथ उनके हृदय के मायारे की क्रुद्दति कर हो तारा और
जिने किसी भारतीय सिद्धांत के ही उनकी च्यामना कर देते हैं।
इन कवियों के इम दशा के मार्गर न जाने सिंहनी मनोपुस्किता की
प्रमाणा गाँवी या प्रेमिका के प्रवास द्वारा कराते हैं। इन
श्रृंगारीक कवियों ने प्रायः दार्शनिक कार्यों के माध्यम से रचित
है। वर्तन तत्त्व समाजसरकार की यह महत्व प्राप्त है। इन मायारे के,
प्राचीन में इन राधिका कवियों ने मन्यताशक्ति क्षेत्रों की हैं। इनके कार्यों
की भाव भूमि नक्सलपर दाँती हैं। परन्तु नक्सलपर नक्ता पर
उनका वृद्धिकण युगाधिकृत दातारक है। इन वृद्धिकण युगाधि राहु
प्राचीनों में देखिए है। (१) उनमें वर्ण के कल्पित वे स्थल
मात्र हैं। इन्हें श्रीराम प्रेमिका का शास्त्रानुसार रचित
तीसरों के साथ रचिता के माध्यम से होता है उदाहरण स्वरूप
ग्यानान्द की उदयपुरिया स्पुदारणी है। (२) महात्मा गाँधी कहते हैं

(१) प्राम सिया पनमावन संग, अन्न तरग्नी रंग परारी।
नारी निधा मातिराम-मातिरा केलि के बुजुर हस्तार उपारी
होत महात्म वहाँ बाहे प्रीतम, सुदरि केलि में हुआ मारी
कद साँ शान, दीप की दीपित, स्मार्क शारि से नैन निलारी।

द मातिराम रशराज हैं ३४ ॥

(२) श्री के शांता संत प्रक्षित स्वरूप है की
रचि वाचि तीनी राजिय रंगनी परमेर की।
हयं न ल्यानि माति कौनि चितमलि निति
पुराति रसाल राम सुन राम इति हैं है।
तिथि राष्ट्रहिं चित्र म याँ प्रवाह रुपी नैनि एं
लहें न पारि गति उल्लट बाजेरी की।
रूप के चरित है जयन्त खेत त्यारी
अंकि धाँ चित्रित तारे ज्ञोंचित चितेरे की द।

घनान्द द ३१ ॥
प्रस्तुत उदाहरणों रीतिकालीन अनुवादित कवियों में मिलती है। यह उदाहरण तो देखने से लाता है कि राग प्राप्त उद्योग का अनुभवित वस्तु बन गया है फलनुत्रुप्तप्राद के सम्मतत्व अनुवादित में यह चरम रिवाज नहीं मिलता। इस रीतिकालीन अनुवादित कवियों की प्रभुता जल्दी और अच्छी सम्पत्ति अनुवादित कवियों तथा स्थापण के दोहे का कारण उनकी रसायनत्वता की शिक्षा और रसायनत्वता की अवतारणा है। जब वे अपने विषय के साधन के साथ साथ दक्षिण ज्ञान जाती हैं तो उनकी भाषा में उन्हें गानें में समीची का दर्शन होने लगता है और वे एक बदसूल वांछित भाव शृंखला कर जाते हैं।

अनुवाद रूप में कवियों की रचनाओं में अनुसूचित श्रेणी

धनानंद के रचना और अध्ययन निवेदन में राग प्राप्त अनुवादित कवियों का व्याख्यान हुआ है। प्रेम की स्वभावित धनानंद के अलावा अन्य ग्रंथों के विभिन्न विषयों की ही इस प्रेमिक कवि ने अपनी वाणिज्यों में साक्षात का दिया है। (v) अर्थ स्थलों पर उनके वाणिज्यों को विश्वास है। (vi) भाषा का रूप वर्णित, विज्ञान के

(3) दूसरे धनानंद चित्रका का कंट्रौल, ५६, ५०, ५५, ६४, ६५, ६८, ६६ से उत्तराखण्ड कविता

(7) धन शान्ति नाम शरण सुना न मिली ता तर तर हो मन वाहि मिले न श्रद्धु रहिये ले मिले ता तर हो, यह पीर भिक्षाम में धीर गिनते ॥

और भी वहीं हैं ५, ४५, ४६, ४६, २६, २५ धनानंद चित्रका ६०४ जी

(8) वहीं तें शांति उदास तर भति, और उसी उदास तर भाव ज्यों कहिताय माशिनिता उमस क्या? हुई कुछ सुपारी नहीं स्थाव।

नाने द धारापरिवर्त वर्तमान धन शान्ति हर्ष अन्धितित पावस जीवन पूर्ति जाने का शान्ति चित्र हैं तर सदारु मयाकस ॥

धनानंद हैं २७, ११
कैसे कहा गिताने मैं सति आराध्या आदि प्रत्येकों में यह दृष्टिकोण प्रयाग है। जान सच्चार्योत्सव और प्रत्येक मैं मुझे कृपयादृष्टि भर नाचना तत्त्व का अवसर दिल्ला है काव्यावली में उभराता है नाचनेके निरंतर शायद ही जाते है। (ि) महाराम (ि) निताराण (ि) विकारी, (ि) तेनार, (ि) पद्माकर (ि) दैत्य, (ि) रामलाल, (ि) वाथ, (ि) शाम, (ि) ठाकुर, (ि) शादि कवियाँ ने जब काव्य फिरों में राग प्रथान शुद्धियाँ का व्याख्याकरण दिया है। इन कवियों में जद्द कहीं कहीं कल्पनारूढ़ित शुद्धियाँ पर व्यक्त है। इन कवियों ने भी यथा भिखा श्री सैयद ही शिक्षा, निराह को कादर वार विचार। केवल छाप संपादित का मिश्रण मात्राओं में नियत है। शुद्धियाँ सकारात्मक शून्य से उद्विगन्त निर्माण को सदिविका और रसाल्पाक्ष कलाया तथा कल्पनामयी कृतित है द्वारा विश्लेषण शून्यात के स्रोतां का विश्लेषण कर उसे संगीत बना दिया। यह तब दर्शन की धारा के मध्य में व्याख्यात्मक दृष्टि में स्थापित है। घनानन्द पदावली

(ि) घनानन्द चर्चिता एं ४०, ५५, ६२, ६५, ६७।
(ि) रसायन हृद ४५।
(ि) हृद १७।
(ि) हृद ६।
(ि) हृद ३३।
(ि) हृद ५।
(ि) हृद ११।
(ि) हृद ७२।
(ि) हृद ४५।
(ि) हृद ५२।
(ि) हृद १६२।
भनानन्द से पूर्वार स्सणा का संयोग हुआ है। भनानन्द से पूर्वार तथा तद्व जन्म का मायाविषयक चित्रण भी गवीता के साथ किया है। भनानन्द से पूर्वार कल्पना के रहर भनानन्द ने स्स्वार के गर्वार प्रचार मिष्टुत रक्षे है। मिष्टुत भी मैंन बण्डने में जहां भनानन्द की महासत्ता है उनके रूप विभाग में सांभारा विभागक कल्पना वृहद्ध ध्वनि है।

भविष्यत का पारंपरिक रूप -
----------------------------------------
परिणामो और कला की दृष्टि से रूपितिकांचूँ के
भविष्यत का यह का अर्थक प्रत्यय नहीं रहता। वे अभी भी 
संस्कारों के कारण वहाँ स्स्तालों पर उनका दृक्कर्षका 
हो गया है। वे रूप निवास सर्वस्वात्क है भुवना तथा या 
दश्त सर्वस्वात्त भी भगावतित थे। मिहिरी ने भविष्यत के 
पारंपरिक स्वरूप की निवृत्ति के पार वे की है। (२) 
लीला, माया, बादी भवना शोषण तथ्य का पारंपरिक 
कल्पना की उपस्थिति के पार वे की है।

रूपिति, कल्पनाराज्य तथा पारंपरिकरुप द्वुभूषक -
------------------------------------------
रूपिति कल्पनाराज्य और पारंपरिकरुप भविष्यत से 
हस्तिणाय उनके उस रूप से है जहां शृद्धकर्षस रागस्वर्ण 
और निष्पादन शृद्धकर्ष ध्वनि है। गया है और जहां कल्पना का 
------------------------------------------
(२) ज्ञान देना ना ही रहस्य धृति सेवत लक्षण है।
(१) नाथ वरो पेशैर ध्वजा वरि सुखना के संग।। मिहिरी हैं ५ ।।
(२) ज्ञान धृति शिक्षा सर्व भानी महामूर्ति मैत ।
बाहुल प्रस्तुती हरसा हारत नैवै।। मिहिरी हैं २३० ।।
उदैश्य अंगार मावना छूट की स्थापना न होकर चमकार मदर्शन न कर्त्ता तापना बच्चों का निमाण रहा है। किसी उन्होंने बताया एक रीतिकाल और परिपारुपच शैली का व्याप्ति किया है। कैहा, मिसारीदास, की रचनाय इस कोट में आती है। शायारिख और रूपि शिक्षा की बहुति है। भुक्कियाँ वह ज्ञानकाय एक अर्णाकिलिक विशिष्टियों में सिन्न मिन्न रूप में व्यक्त हुई है। इस परिपारुप का नतिनिधि मन्नादर्शिक विशारीदास की जन्मावधी, मतिराम का रसराज है।

प्रतिपाद का विवरणात्मक रूप -

रीतिकालिन वृम्मरि कवियाँ ने प्रतिपाठ अंगार रच के प्रति विवरणात्मक दुखिताश्रावण वचन रूप है अवशय है। मतिराम देनाय, शुभार्क तथा धनानन्द की संवृत्तियों में अंगारस का विवरणात्मक वर्णन विशिष्ट है।

लौकिक मेम और रीतिकालिन अंगारिक कवि -

रीतिकाल है कवियों ने ऐतिहासिक मेम की गृहता, गम्मरता तथा रैणस्त्राव का स्पर्श मुख रूप से दर्शाया है। रीतिकाल का अंगारस काव्य एक मेम प्रतिरूप लौकिक मेम गाथा है। इस अंगारिक कवियों ने मेम के अनेक प्रश्नों का समाचार करके उनके लौकिक फल को पुष्ट किया है। वास्तव मेम का अविभाज्य वर्णन करने की कई पद्धतियाँ विविध है।

प्रथम अंगार का मेम - विवाह सम्बन्ध है जाने के प्राचीन क्रम चाँद में विकसित होता है इसका आदर्श रूप शल्य वाच्य रामायण है।
रितिकाल में ऐकास्तिक श्रेय का कथा नायक की रूप विषय वृद्धिमात्र हैं। चाहे शामिलय या पारिवारिक श्रेय की मति श्रेय का रूप नहीं भिक्ता। एक श्रेय का उन्नति है। यद्यपि वर्तमान, श्रेय उन्नति श्रेय किस्म, चाहे तीनों जाना पातलग ही प्रभु प्रिय है। रितिकालीन क्षेत्र के संबंध में जीवन के बारे में बारे गंगा के साथ श्रेय के सम्बन्ध का स्वरूप नहीं दृष्ट शाहिया है। हेतु यह श्रेय वर्तमान पारिवारिक बारे शास्त्रिय जीवन से विभिन्न ही नहीं माना है।

क्षेत्र पर उदय, गूढ़ी क्षेत्र के स्थल तथा सत्यासन्ता के संस्कृत में विभिन्न जानियां बारे वन्य के बीच श्रेय को मूल जुड़ते लगा था। राजदरवार तारीखित में शूरुआ बारे मौल दोनों के दृश्य दूर करते थे क्योंकि शूरुआ के ही जन्म रह गए। भवान की उपासना के दो भाग बोले गये उनमें लेता फुलशौम दिन के उपासना में
शृंगार का भाव का रंग चढ़ गया। कवियों ने जब इस स्वरूप का निम्न प्रकार स्वरूप दिया तो वे “राय फुटवाई के सुमन की बहाना है” कहते हैं। फूल से पौधे शृंगार यहा तक कि कपिलरी रंग के भरे विचार भी साहित्य में पर पिये। रोमांचकारी अभिज ज्ञात का जब रासिम्भजा हुआ उस समय जो जनवाड़ी की स्थिति “आली बली ही गरी भिंजी आगे काल हवाल" वाली थी।

इस युग में कविता स्वास्त्य: सुसाय न हैकर स्वातीय: सुसाय है रही थी। प्राकृत वार अप्रभ की खिल परम्परा की फिरकर विहारी ने कप्तन काव्य स्वतंत्र का सवाल करकर दिखाया वह क्या स्वतंत्र उसने दर्शनी न्याय के विचार के बार वालया भी कहीं कहीं दास्तान रत्न की रूपी भावना ही फिर काव्य स्वतंत्र भी उसमें क्या गया(६)। नाकिका स्वतंत्र का सुंदर दक्खिन नहीं सुंदर कि उसी सुंदर में सुंदर है बिलकुल दक्खिन बुक कि सिंहक्तम ने उसका चुम्बन किया है। वालया जैसे प्रति मार्क्यायों के हुस्त में भी कपिल मार्क्यायों स्वतंत्रक उठ सकते हैं उनका यहा पर वाहक दिखा गया है। एक बन्य दृश्य में विहारी ने काव्य स्वतंत्र के साथ से सामाजिक बन्धनों में नयी धारा की मार्क्य को अच्छी है।(७)

विदेश गये एक पत्र की स्वतंत्र फितु लूस से है या पत्र की पत्र की विश्लेषण प्रकाश के स्वरूप आए तो स्वामित्व है। किन्तु

(६) कित्या शुलाय मित्र दीक्षित माँ दिखा रहा दृष्टि। पतिक दशीत पुंराज को किन किन चुम्बक सुहावे चुम्बक। विहारी १६५।

(७) लक्ष्मण तैली के मिसन लेने मानिंद्र आय। गया भाषक आर्यवर्ती दाता है। हृत्यार २२५।
पति मैं यदि वाल्स्कार को अवकाश ही न मैं तो यह बृहस्पति पुरुष को लकीरगता तो हृती ही, व्यासक पात्र मद्विति श्री विपरीत है। रंग-क्षेत्र में हस श्रीमतीजी श्रृंगार रत्नकंद्रिय प्रवृति में मुखुद मनोदाता श्रृंगार काव्य है। श्रीकृष्ण के रंग-क्रम का उत्पाद करते हुए उन्होंने बनफ कारन लिया है। (२) रोचक काव्य की कविता जन नक्शा तीता से ज्ञातकाव्य से हटकर श्रृंगार रथों रक्षा का वह एकम श्रृंगार काव्य है गह गह पर नक्षा का मनचन मिल जाने से मन्द ने चित्रिती हरे केवल मैं की पीर के रप में बना रही। द्रुम्या बाली प्रवृति हट गई। मैं की पीर भर भर मैं की तीरंगता का भविष्य करने के लिये यजा का उत्साह, क्षेि का चार सर कदाही अधिष्ठि भरी संघात को लाते फाती भर उठे क्षेत्र में भाव बनाती है। वैसे जायरी ने लिखा है। (२) हिंदी के श्रृंगार्-शाले हैं रोचक सुंदर कवियों ने आलम, ठाकुर, पनानन्द, गौंध शार्दूल में मैं का जो अनुष्ठान रुप मिलता है वह भी चित्रिती मैं की पीर के वर से ज्ञात है। पनानन्द की कविता सम्पन्न ने के लिए मैं की पीर की प्रतिवाद श्रेयस्की माननी गई है। लक्ष्य पनानन्द में कहा है -

समकाली कविता जन जानन्द की, दिह जागवगज नैष की पीर के।

(२) दृष्टि दृष्टि दृष्टि प्राप्त गह धीर हावे, फेरिन हावर्दनी ताप भिष्मकीय की ताप धीर वह भी बन्द क्षेत्र के रथ चित्रा भाव गवान्द कहते है, तिचन्त तपस्य दस दाहकी उत्तरात धीर। बुरी दुर्लभ गात्र अधिष्ठि ज्ञात, रह न सबूत वह निर्बह धूर्व नैष ने धीरे फिर कि घर भाव मे धनस्याम धर सहायक पर भाव न लितात धीर।। केल।।

(२) मूर्ख गरीबन्थे यह निम्न धीर।
इन कवियों की कविता में प्रयोग में सिलेन्स के लिए पद्क, 
नदी नाटा लाघवा, उसकी गति में फार्मे लागा, बालिका वक्तारीं 
की चौंट से हरदम हटपटाया करता, नीचे का पिसाला लागा, 
मनुष्य को बचाने ही न करता।

सुरति हिंदी की शैक्षि वाएँ है जो विदेशी से दिन दिन 
पुरान है पद्मारि और गनानद ने इस विदेशी समृद्धि को भारतीय 
समृद्धि साहित्य मानव के पाव 
समृद्धि का ही कथा वुढ़ है। बते में मात्र जो प्राणन्तः वनम 
मायाओं का उद्वोध या मुख्य साहित्य का प्रथान व महत्वपूर्ण 
विषय 
रचा है वहसंतः शनामसुप्रति वां साहित्य में तो रूप उपलब्ध है।

मैंने धित्व आलम्बन के आधार का है। लालिक मैं का 
आलम्बन शुद्ध प्राणर्ये भारतीय वांधन की रूपन्त्रकता से स्वत: मानव 
दृढ़ है। तवा कवि दिनों दैव स्थापि का अपनी मात्र का 
आलम्बन वनार के पायाओं का व्यक्त करता है फिर लालिक मैं 
ही उसका कार्य विषय होता है। मैंने लालिक कक्ष तीति है 
रूप में चित्रित रूप से नाव का भाषण विषय होता है। 
हिंदी में भूम्य रचा है मैंने अधार का वांर न लालिक कक्ष 
ते स्तर पर ही दृढ़ है। यथापि तै सातारी चरित्र है। रोलिशुका 
कवियों का उत्तर विषय मैं है। निर्माण रूप में विस्तार चित्र 
वाने पर भी मैंने ही शीघ्र रथा का मूल तत्त्व बुद्ध बार 
किला। जो बुद्ध मैं न परिश्वर और विकास नहीं कह तथा शादी 
विवाह में वर्णित कर दिया गया है। इनकी मैं व्यक्तवादी तीति 
मैं मात्रा की आम व्याख्या है। उसमें स्वाभाविकता एक 
विवाह व्यक्त हृदा है बाराफति या किसी प्राण का निवृद्ध नहीं है।
नन्द कास्यों में हुदय के स्पन्दनों का तेला जीता है। मात्र स्वतंत्र मनाये के लिए और व्यापारी अर विशेष नहीं है रीतिशुलाक अवधियाँ का प्रेम जौहरी गाँधीजी का प्रेम नहीं है बाल्क नायक नायिकाओं का प्रेम है। ऐसा भी नहीं माना जा सकता कि रीतिशुलाक कवियों में प्रेम की बस्तुति ही न थी कहने का तात्त्वक यह है कि उन्होंने प्रेम सूर सूर किलित कर उनमें काव्य सुबल की सुधृत्ति हुआ करते थे।

रीतिशुलाक कवियों की अपनी अपनी प्रेम व्याख्यायें हैं पनानन्द और सुजान, जोना और सुजान (पनानन्द) आलम और शैव या कोई अन्य बृहस्पति आशि की प्रेम व्याख्यायें प्रसारित हैं। धीरे सुशुरीन में प्रेम कार वाले श्लुधुर की संसूचनायाँ के इसी कोटि में प्रसंसक है।

रीतिशुलाक कवियों का निर्देश प्राप्त वही था जहाँ उन्हें प्रेम वाहिता मिलता था। उनका प्रेम अगर और लंबी नि साहन और शमशार की स्थानियता की भावना नहीं बिड़ल उनका नि साहन करके आपने किया है। उस प्रेम में प्रेम ही रास्ता था और प्रेम ही मिलत थी प्रेम ही स्थानियता थी। रीतिशुलाक कवियों के काव्य में प्रेम का परमार्ग रूप प्राप्त न होने में निर्देश और स्थान्त्र रूप देखने की मिलता है। कृमणत कवा समानाधिक साहित्य परम्परा में किरण प्रेमों का वर्णन मिलता है वह हृदय और समाज की स्थानियता में की तथा प्रेम का वर्णन है। उस प्रेम में हिंदु कवियों में कितना वर्णन हैं किस्मों संवेदन है गुलजना का संरेख और समय ही तांब की लज्जा है। इसी दिनों से बाद नायक परदेस उ
वापस आया है ताकी परिप्रेक्षा लोक भर अप्रिल! हैं मय-मे और आधे पर दैत्य गिर नहीं गए। दूसरी की उत्कृष्टता उसे आधिक व्यक्ति कर रही है। उससे रहते नहीं था यह जल्दी ही शाक्ति है और दुर्गा नहीं आयी है। (७) उससे नस्ल पर अन्य प्रारंभ की तात्कालिकता की चाहे है। (८)

एक दुःखरात् नायक है जो परदेस जाने की सूक्ष्मता है वह त्रिलिंगियों के बीच से एकान्त में अपनी ज्ञानमा के पास गिर्ना लेने जाता है। परंतु उसे रात्माओं की ग़ज़ल लेनी पड़ती है। एक अन्य नायक अपनी बातों को मान्यता में रखने वाला होता है। (७) स्वर्ग से बिवियों को घाड़ लाकर परशुराम किंग्स की विश्वासनीयता तो है। रास्ते में यदि वे निरंतर प्रेरणा की सुन्दरीक लोक तो लोक पर नहीं चल सके। स्वर्गीया परम्पराओं का प्रति ग़ज़लकर्ता के कला कला प्रारंभ करे प्रेरणा भी सच्चा सच्चा प्रारंभ की लाभ पूर्णी पर लाभार्थिय भिन्न भिन्न वृक्षकों पर व्यस्त आदि पर निरंतर प्रारंभ पतंजलि प्रबंधिता पतिला आदि नाशिका के मैं भ्रमण की लाभ हिस्से या चौरी चौरी सदिश में भांजा देवियों का चयन से उपर भ्रमण तक, रामण,

(७) नायक सर दे लाए ते दिन ते तसन्न इतन आराम।
वाव तलीनी फांकि है, गहूं भरों का उद्धरक।
(६) प्राण ऊँचे रात्रिक उलटी, चौरी चौरी धूं तिर।
नंगी चौरी भीं रहै जीड़ शोष तिरी जीर। विद्वारी।
(७) कफन कहत रामानंद सक्त, सन्मान सिल्ला तंविष्णव।
भरे माता में करत हैं नृमि हो भी बाल। विकारी।
सप्ताह, सप्तिक छूट्यांत गायकांक रीतिकी नारिकां धैर भैर ग्राम्यकारां
शही निर्दिष्ट शेष तारे के विषय हैं। श्यामिक गायन ने रीति
पुका रुवांग कवियांं के कायां में हुव़ा रही, अन्तःक्रान्त को तैमी मनाहर
फलित ही। रीतिनष्ट कवियांं में तैमी क्रान्त है। देव, विहारी,
पद्माकर दास, महाम, सेनापति शास्त्री शास्त्री ने जहा बुद्धिमति
के साथ शेष की क्षिप्रता की है वहां दे भी शेष के सुन्दर उद्धार वार अन्तःक्षण की मनोरसम श्रीमत्यकारिणयां है गधी हैं।

भारतीय काव्य परंपरा में शास्त्र निष्क्रांत का बाराबर
श्याम रहा गया है। शृंगार काल में कवियांं ने नारिक नारिकार्यों
की शेष तीतार्कों का निष्क्रिय शित्ता दी गया है किन्तु उसमें स्वच्छीय
मात्रां ने विस्तार का क्रियाश्रय न मिला।

हिन्दी में शृंगार चारा महत्वपूर्ण से छूटी है और सीधे
लौगिका में लोक के माथे पर उसका सम्बन्ध नहीं रहा। बतः अश्लीलक
पुष्कर में मध्य के मीतर जो दाम्पत्य में उठक रहा वह सबसे व्यापक का शेष
हो रहा क्योंकि उपाय्य भार उपाय्य अयुत्ता शाक्षरके या शाशुके
के रूप की लम्बी चाकू भूमि परलिया शेष के परिक्रां में विस्तार पड़ी
जिसमें अलंकृत सम्बन्ध का शहर होने लगा। लघु प्रकार में क्रिया की
निर्माण के शहर में परलिया शेष के विस्तार को विशेष उपस्थिता
मात्रा है। हिन्दी साहित्य को उस समय जिस साहित्य में
सत्तादिन्वित करनी पड़ी उसमें परलिया शेष का वाक्यावृत्त है।
प्रतिस्पर्धां में पीछे हटने पर कवियां का तिरस्कार होता था बतः
नारिका शेष के माध्यम में शेष के लिया गया परन्तु शास्त्रिज्ञों
की प्रमाण में लक्ष्य में शेष के बालकन रामकेश और श्रीमण्डल माने गये।
शेष की परंपरा वास्तवपूर्ण रचना करने वालों में पक्ष की श्रुतारुप्ता
काैं नै विश्वास की पूरा महत्त्व किया। स्कौच रचना के लिए भाषित
हुँदा जगाती हुए रोग गए दि-

रागिणी की कविरी रोपण न है तो कविताएँ
ननु राविका नृवाह सुभिनन कै वहाँना है।

काव्य के सति परिवर्तित दृष्टिकोण
------------------------

रोपणिताल के विशिष्ट श्रृंगार कविरी निम्नांश सम्प्रदाय में प्रविष्ट
थे। उनकी रचनाओं में श्रृंगार रस की उदांतता और मुहा का चमत्कार
मिला है। रोपणितालीन श्रृंगार रचनाओं में श्रृंगारिक मायावासी
चमत्कार, मायावासी की विश्वासता का प्राचार्य है गया था। यही
कारण है कि विश्वास, पदार्थ, घनान्द बौध आदि कवियों की
रचनाओं में मायावासी रस और दृष्टिक श्रमिकाको का प्राचार्य है
गया मिला है।

काव्य के सति प्रवाह के सति दृष्टिकोण के विशिष्टता
परिवर्तीन के लिए मनीक तक्त उदरायनी थी। इन कवियों के सति प्रवाह
के वाद के में कौन विशेष वन्तर नहीं गाया है। समी में श्रृंगार
के कारण गूढ़ तत्त्वों का आधिकारिक अक्रम है।

रोपणितालीन श्रृंगारिक कवियों के विश्व विषय में श्रृंगार
प्रदान सुन दश्च का रूप भाव पदा है। वादित्विक दृष्टि से
इन कवियों के भूमणि पूर्व कवियों की रचनाओं का क्रम पृथ्वित विषय किया
है। फिन्न नैर माह मादत पत्रों हो सारों में इन कवियों ने झुण्डकार
परिवर्तीन किया है। श्रृंगार के पात्र में गूढ़ता के साथ ही उद्द के
प्रमाण स्कौच उन्नति फारसी काव्य का महत्त्व रंग बना १।
दिलाया है। अनुसूचारपक्ष प्रतियोगी में से मुख्यतः तत्त्व विश्लेष
हो पूर्व में गया है। इन कवियों के राय में महुआ मानव मुख्यतः
कृष्ण रात्रि पारसिक ईला बन गये बार उनकी भारतीय लौगिकी की
मान्यता में भी व्यापक रूप से सम्मान का समावेश हो गया। उधर
समय में राय में धार्मिकता के नाम पर केवल वानस्पतिक शरीर की
शैल रह गया। राघव विलस मार वही सम्राट के विद्वानों में
धार्मिकता के कुछ मार विनियोग धारण की। रास की
वायुप्रस्फुट अवस्था भी लोगों द्वारा स स्त्री वैश्विक धारणा करने
लगे सोमित रह गई।


gātikāl

उपदेश और महिमा गान के रूप में दिले हुए स्थल में
थकते का समावेश हुआ है। देव; विहारी, पदमाकर,
मिसारियास, रघुल, विद्यासागर, बलकुल, द्वारका शाली की रचनाओं
में धार्मिकता का पुष्टिकृत अभिव्यक्ति हुआ है।

रोचिकाल में विभिन्न परिस्थितियाँ और भ्रमणावली के
फलस्वरूप अत्यन्त चर्चाकार और स्थूल व्याख्याता का प्राप्ति
हो गया। शूरार के तालक नाट्र में स्थूला के निषेध की
पावस्थिता ही नहीं अत्यन्त गई और वह युवा की कृष्णमलिक की
काव्य में भी उसका समावेश बिना किसी हिस्से से हुआ। वहाँ के
नाम पर दिले गये काव्यों में स्थूला की यह वर्तमान बार काव्य
दृष्टिकोण में निकाल की चमश तक पहुँच गई है। रोचिकालीन
कवि की दृष्टि विलास और उपमा ग्राम प्राध्याय थी इसीलिए उसकी
रचनाओं में पुष्प श्रेष्ठ मार्ग की परिष्कार सुसंकाय का भाव है।
तक्षालीन कृष्णमलिक कवि भी उसके अस्तित्व नहीं बन सके।
एक सभ्यतावादी भाष्यकार की दृष्टि से हिंदी का 
रूपांतरण मानव अर्थगत का रूप माना जाता है। 
भाष्यकार का मानना में मतियास का भाष्यकार का साधन 
रूप में ही स्थीर कार्य गया था। रूपांतरण में मति काव्य 
का मानना मूर्ति जैसा पारंपरिक स्थलाक्तों में पारंपरिक दृष्टि पर 
वहीं उसमें संरूपति भाष्यकार का समन्वय रूप ने चमत्कार 
अर्थगत का रूप घातक का लिया। यह चमत्कार भाष्यकार के 
समी प्रत्ययों के प्रति में प्रतिक्रियां हुई। विभिन्न अर्थतत्त्व तथा 
चमत्कार अर्थगत की यही संरूपति मध्यम रूप भाषाओं के प्राचीन में भी 
पुरातात्त्विक है। वास्तव में उस यून की श्रृंगारिक कविताओं के 
रूप व उपादानों के वार्ता अर्थसंरचना की बारे में उन्मुख थी। 

रूपांतरण के श्रृंगारिक कविताओं ने फिरी व्यापक जीवन दर्शन 
की भाष्यकार नहीं की भाष्य अर्थतत्त्व तथा मानव जीवन में विविध 
उपादानों विश्वासिता के रूप में रोशन करके ही लिखी है। उनके 
काव्य में विलास और वैचार तथा समस्त अर्थगत संरचित हो गये है। 
जीवन के व्यापक और शास्त्र उपादानों की भाष्यकारिता में संरूपति 
होने वाले उपादान और संरूपति भी इन कविताओं के हार्दिक विरह तथा 
मिलने के स्थल बार्तमें व्यक्त्व उद्दीपन के रूप में ही संरूपति हुई है। 
वास्तव में रूपांतरण के श्रृंगारिक कविता के श्रृंगारिकों से विपरीत 
करना समय नहीं है उनका मूल स्तर है विलास, वैचार और 
श्रृंगारिक तथा तीनों तत्व उपर्युक्त कविताओं के काव्य में व्यापक 
रूप से मिलते हैं।